www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२१ ● अंक : ४८ ● २६ नवम्बर, २०१६ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष अमावस्या सम्वत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

हम आर्य-करें शुभ कार्य

आर्य समाज बाँगर मऊ के वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज बाँगर मऊ जनपद उन्नाव के ४५वें वार्षिकोत्सव के समापन अवसर पर दि. १३ नवम्बर, २०१६ को आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा व मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द का मुख्य अतिथियों के रूप में उत्सव स्थल पर भव्य स्वागत किया गया। मुख्य स्वागत कर्ता श्री राम गोपाल आर्य प्रधान, श्री श्याम सुन्दर आर्य मंत्री, श्री शिव भूषण आर्य कोषाध्यक्ष आदि ने पुष्प मालाओं से करतल ध्वनि के बीच दोनों मुख्य अतिथियों का स्वागत किया। अपने सम्बोधन में सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल जी ने आर्य समाज का नाम करण बहुत ही विदत्वतापूर्ण ढंग से मंथन करने के पश्चात् रखा था जो श्रेष्ठता का संगठित प्रयास है। आर्य समाज के छठे नियम में इसका उद्देश्य भी स्पष्ट कर दिया है-''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना'' आर्य समाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का यही था कि भारत वर्ष के समस्त निवासी आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बने। यह तभी सम्भव है जब हमारे देश के युवा चरित्रवान, बलवान, राष्ट्रभक्त, ईश्वरभक्त धार्मिक व संस्कारी होंगे। सौभाग्य से देश में

ज्यादातर नवयुवक हैं। जो नेतृत्व विहीन व पाश्चात्य रंग में रंगे हैं। वैचारिक शक्ति का अभाव है। इतिहास गवाह है आर्य समाज रूपी भट्ठी में तप कर स्वतंत्रता आन्दोलन में ८० प्रतिशत आंदोलन कर्ताओं ने अपने प्राणों की आहुतियां डाली। अनेक बुद्धिजीवी विचारक, सन्यासी व समाज सुधारक आर्य समाज की ही देन है। आर्य समाज के सिद्धान्त अकाट्य निर्भ्रान्त व सर्वश्रेष्ठ है जो वैदिक आधार पर बनाये गये हैं।

सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अपने उद्बोधन में युवाओं को अज्ञानता, अन्याय, अनाचार नशा आदि के विरूद्ध संगठित होकर आवाज उठाने का आवाहन किया।

चरित्रवान युवा ही राष्ट्र निर्माण के स्तम्भ होते हैं। जिस राष्ट्र के नवयुवक तेजवान व चरित्रवान होते हैं उस राष्ट्र को उन्नति करने से कोई शक्ति रोक नहीं सकती है। यह अत्यन्त दुःख का विषय है कि आज हमारे देश का नवयुवक दिग्भ्रमित है तथा अनेक दुर्व्यसनों का शिकार हो गया है। यह ऋषि-मुनियों का देश किसी समय ''सोने की चिड़िया कहलाता था'' राम राज्य के प्रतीक अभी भी मौजूद हैं। जो सर्वांगीण विकास का केन्द्र था। विश्व गुरू के रूप में इसे पुनः प्रतिष्ठित करना है। यह तभी सम्भव है जब हमारे देश के नागरिक ईमानदार व चरित्रवान होंगे। आज हमें दृढ़ता पूर्वक देश की उन्नति के लिए, अपने को बदलने के लिए संकल्प लेना होगा। तभी यह राष्ट्र पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त कर सकेगा।

सभा को श्री राम गोपाल आर्य व डॉ. ज्योत्सना वेदरत्न श्री कुलदीप विद्यार्थी, पं. सुमित्र आर्य आदि ने भी सम्बोधित किया।

शराब बन्दी आवश्यक क्यो?

-डॉ. धीरज सिंह

आर्य समाज रूद्रपुर (उत्तरांचल) के वार्षिकोत्सव में दि. १६ नवम्बर, २०१६ को उपस्थित आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कार्यकारी प्रधान डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि ''ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना समाज व देश में व्याप्त बुराइयों को समूल उखाड़ फेकने के लिए की थी। जिसके लिए आर्य समाज सदैव प्रयासरत रहा है। आज समाज में नशे की लत के कारण प्रदेश के परिवार तबाह हो रहे हैं।

''मद्यपान या नशे को प्रोत्साहन देना मानवीय अधिकारों का अथवा स्वतन्त्रता का संरक्षण नहीं, अपितु पशुता के अधिकारों का संरक्षण है।'' क्योंकि शराब पीकर व्यक्ति विवेक शून्य हो जाता है और मननशील एवं विवेकशील होने से ही व्यक्ति मनुष्य कहलाता है। शराब मनुष्य को जड़, मूढ़ एवं पशुवत बना देती है। अतः शराब को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना, नशा करना, नशे के साधन उपलब्ध करवाना ये तीनों ही कार्य तथ्य, तर्क, जमीनी हकीकत एवं मानवीय मूल्यों के आधार पर नैतिक व सामाजिक अपराध की श्रेणी में आते हैं।

शराब पीकर मनुष्य, पशु बन जाता है। उसकी सोच छोटी हो जाती है। क्रूर बातें अश्लील बातें सोचता है, अपराधिक बातें सोचता है। ये सोच, विचार तब-तब आयेंगे जब जब वह शराब पीयेगा। इस प्रकार विचार शक्ति प्रबल होने के कारण शरीर भी वैसे ही कार्य करने लगता है चाहे फिर शराब न भी पी हो। महात्मा बुद्ध ने कहा है कि ''जैसा हम सोचते हैं वैसा ही बन जाते हैं'' अष्टांग योग भी यही कहता है कि ध्यान में जैसा विचार प्र बल करेंगे मन वैसा ही करने लगता है, शरीर भी वैसा ही हो जाता है तथा मन वैसा ही करने लगता है।

नशा शराब तो एक सामाजिक अपराध एवं सर्वनाश की जड़ है। शराब, तम्बाकू आदि नशा कामुकता, दुराचार, व्याभिचार, महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, अपसंस्कृति, हिंसा अपराध पारिवारिक विनाश भ्रष्टाचार को जन्म देता है। शराब लीवर रोग-लीवर सिरोसिस, लीवर कैंसर, गुर्दा रोग, हृदय रोग, टी.वी. आदि जैसी भयंकर बीमारियों को जन्म देती है। भारत में प्रतिवर्ष शराब एवं तम्बाकू आदि नशीली वस्तुओं के प्रयोग के कारण से ५ लाख लोग लीवर सिरोसिस कैसर, किडनी फेलियर आदि रोग के कारण मर जाते हैं। एक और बड़ी बात है कि जितना टैक्स के रूप में सरकार रूपया शराब, तम्बाकू आदि के कारण प्राप्त करती है उससे कहीं अधिक, शराब, तम्बाकू के कारण होने वाली बीमारियों पर खर्च करती है। फिर क्यों शराब जनता के बीच परोसी जा रही है।

शराब भ्रष्टाचार की जड़ है। शराब की लत में बुद्धि से हीन व्यक्ति गलत कार्यो को ही सोच सकता है वैसे भी शराब से सारी शर्महया खत्म हो जाती है और वह रिश्वत लेने में भी शर्म नहीं करता चूंकि उसे तो परिवार के लिये, मौजमस्ती, भौतिक वाद की तरफ बढ़ जाता है। इस प्रकार वह रिश्वतखोर हो जाता है। भाईयों आप एक सर्वे करें कि कितने शराबी (जो नौकरी करते हों) रिश्वत खोर हैं या यह शर्वे करें कि कितने रिश्वतखोर शराबी हैं। तो आप पायेंगे कि अधिकतम ६६.६ प्रतिशत शराबी रिश्वतखोर हैं। बलात्कार अपराध व्यभिचार की घटनाएं भी शराब के नशे में सबसे अधिक हो रही हैं यदि शराब पर पाबन्दी लगे तो रिस्वतखोरी, बलात्कार, अपराध की घटनायें बहुत कम हो जायेंगी।

आर्य समाज ने शराब मुक्त प्रदेश के लिए आंदोलन चला रहा है जो तब तक जारी रहेगा जब तक उ.प्र. में पूर्ण शराब बंदी लागू नहीं हो जाती है इसके लिए प्रदेश के समस्त जनों को संगठित होकर प्रयास करना होगा।

वेदामृतम्

न तमंहो न दुरितं कुतश्चन ,नारातयस्तितिरून द्वयाविनः''।
विश्वा इदस्माद् विबाधसे यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते.''

ऋग्र 2.23.5

हे परमात्मन्! तुम ब्रह्मणस्पति हो,'ब्रह्म' अर्थात सकल वेदज्ञान सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड व सकल ऐश्वर्य केअधिपति हो। अतः जो तुम्हारी शरण में आ जाता है, और जिसकी सुरक्षा तुम अपने हाथ में ले लेते हो, वह स्वभावतः समस्त विपत्तियों एवं समस्त विघ्नबाधाओं से तर जाता है। सामान्य मनुष्य प्रायः कुसंगति आदि में पड़कर पाप के पंक में फँस जाया करता है, पर ब्रह्मणस्पति प्रभु के मित्र को पाप कभी नहीं घेरता, न ही उसे कही से 'दुरित' अर्थात् दुष्कल प्राप्त होता है, जबकि सामान्य–जन अनेकविध दुष्कलों से ग्रस्त पीड़ित होते रहते हैं न ही उसे आन्तरिक और बाह्य शुत्र पराभूत करते हैं, न अदानभाव या स्वार्थवृत्तियाँ उसे दबोचती हैं। न ही वे लोग उसे कोई हानि पहुँचा पाते है जो द्वयावी हैं अर्थात जिनका द्विविध आचरण है, जिनके मन कुछ और तथा किया मे कुछ और, जो ऊपर से स्वयं को हितैषी प्रकट करते है। किन्तु अन्दर जिनके विष भरा होता है। जिसपर ब्रह्मणस्पति प्रभु की कृपा नहीं हुई है, वह ऐसे 'द्वयावी लोगों के चंगुल में फँस जाता है, तथा स्वयं को बर्बाद कर बैठता है। पर 'ब्रह्मणस्पति' प्रभु जिसके साथ है, वह ऐसे व्यक्तियों से छला नहीं जा सकता।

है ब्रह्मणस्पति नगदीश्वर! जिसे तुम अपनी सुरक्षा में ले लेते हो वह समस्त हिंसको को परास्त कर देता है। ये हिंसक है। मनुष्य के अन्दर रहने वाली हिंसावृत्तियाँ, काम–कोध लोभ मोह आदि मनोविकार अथवा हिंसा उपद्रव मचानेवाले मनुष्य। ब्रह्मणस्पति के सखा को इनमें से कोई हिंसक एवं क्षतिग्रस्त नहीं कर पाता, अपितु वह इन सबको विबाधित, पराजित एवं विनष्ट करता हुआ निरन्तर उन्नति करता जाता है। हे ब्रह्मणस्पति प्रभु! तुम हमें भी अपनी सुरक्षा में ले लो और संकटों से हमारा उद्धार कर, प्रगति–पथ पर अग्रसर कर हमें उन्नति के शिखर पहुँचा दो।

देवेन्द्रपाल वर्मा — प्रधान/संरक्षक
डॉ. धीरज सिंह — कार्यवाहक प्रधान
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती — मंत्री/प्रधान सम्पादक
आचार्य वेदव्रत अवस्थी — सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

नोट बन्दी सही या गलत

नवम्बर के प्रथम सप्ताह में प्रधान मंत्री श्री मोदी जी ने अचानक सभी देशवासियों को स्तब्ध करते हुए ५०० व १००० के प्रचलित नोटों को प्रचलन से बाहर कर देने का ऐलान कर दिया। उनका यह कदम बेशक सराहनीय व स्वागत योग्य है, लेकिन इतने दिनों बाद भी नोट बदलने के लिए लोगों की परेशानी कम होने का नाम नहीं ले रही, जबकि अस्पतालों में दम तोड़ते मरीज, यात्रियों, रोज मर्रा की जरूरतों के लिए यह समस्या ज्यादा विकराल हो गयी। कई शादियां टूट गयी या स्थगित कर दी गयी क्योंकि नये नोटों की व्यवस्था तत्काल होना सम्भव नहीं था। छोटे व्यवसाइयों, फेरी वाले, ठेले व फुटपाथ पर धंधा करने वाले लोगों के लिए व्यापार करना दिहाड़ी मजदूरों आदि के लिए जीविका चलाना मुश्किल हो गया।

विपक्षी दलों ने भी अपनी रोटियां सेंकनी शुरू कर दीं सरकार के इस अप्रत्याशित कदम की निंदा करने लगे हैं। कई राज्यों के विधान सभा चुनावों के कारण भी सबका बौखलाना लाजिमी था। चुनाव में नगद राशि ही मतदाताओं को प्रभावित करती है। जो कागज के टुकड़ों में बदल चुके थे। माफिया-हवाला-भ्रष्टाचारियों व काला धन जमा करने वालों के लिए यह निर्णय असहनीय था उन्होंने भी एक रास्ता जन-धन- योजना में खाता खोलने वालों को रूपयों का लालच देकर निकाल ही लिया। उस पर सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया है।

विश्व की कई बड़ी अर्थ व्यवस्था वाले देशों की तुलना में भारत का सफल घरेलू उत्पादन अर्थात जी.डी.पी. नकदी पर ही आश्रित है और नगद राशि जमा करने के मामले में भी भारत यूरोपीय देशों की तुलना में आगे है। इसके अलावा भारत की समानांतर अर्थव्यवस्था भी नगद राशि पर ही आधारित है। सरकार द्वारा जन धन योजना के अन्तर्गत खुलवाये गये करोड़ों खातों में जमा की गयी धनराशि भी इस तथ्य को प्रमाणित करती है।

सरकार ने यह फैसला हो मुख्य दो बातों को ध्यान में रखकर लिया है, एक काले धन पर चोट, दूसरी नकली मुद्रा के द्वारा आतंकवाद पर अंकुश लगाना। आयकर के आंकड़ों से पता चलता है कि काले धन के रूप में लोग बेनामी सम्पत्ति या विदेश में जमा करते हैं।

राजनीतिक दल भी चुनाव में कालेधन का इस्तेमाल जम कर करते हैं यह कहना गलत नहीं होगा कि काले धन में राजनीति की सांसे बसती हैं। कालाधन राजनीति द्वारा संरक्षित है। क्योंकि जिस तरह नोट बंदी का विरोध राजनीतिक दल कर रहे हैं उतनी जनता परेशान होकर भी नहीं कर रही है। भारतीय जन मानस यह सब इसलिए सह रहा है क्योंकि उसे सुधार का विश्वास है।

सन् 1978 में 1000 रूपये से ऊपर के नोट बन्द कर दिये गये थे तब वह चलन में कम थे परन्तु वर्तमान समय में बड़े नोट चलन में ज्यादा हैं। 86 प्रतिशत नगद भुगतान से ही व्यवस्था होती है। जिस कारण देश की आबादी का 80 प्रतिशत हिस्सा इस नोट बंदी से प्रभावित हुआ है।

बहरहाल सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय इस सम्बन्ध में लिये हैं। जो पहले लिये जाने थे। बैंक कर्मचारी आदि भी इस प्रक्रिया में जी जान से लगे हैं। सकारात्मक प्रभाव में बैंकिंग क्षेत्र व इलेक्ट्रानिक लेन देन गतिशील हो सकती है। सर्राफा, सम्पत्ति व्यवसाय आदि पर नियंत्रण तथा आतंकवाद पर भविष्य में अंकुश लगने की उम्मीद है।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

अथ द्वितीय समुल्लासारम्भः

अथ शिक्षा प्रवक्ष्यामः मातृमान्
पितृमानाचार्यवान् पुरूशों वेद।

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उन का हित करना चाहती हे उतना अन्य कोई नहीं करता। इसीलिए (मातृमान्) अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य स मातृमान' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे।

माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य दुर्गन्ध, रूक्ष, बुद्धिनाशक पदार्थो को छोड़ के जो शान्ति, आरोग्य बल, बुद्धि पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजस् वीर्य्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम हो। जैसा ऋतुगमन का विधि अर्थात् रजोदर्शन के पांचवें दिवस से लेके सोलहवें दिवस तक ऋतुदान देने का समय है उन दिनों में से प्रथम के चार दिन त्याज्य है। रहे १२ दिन, उनमें एकादशी और त्रयोदशी को छोड़ के बाकी १० रात्रियों में गर्भाधान करना उत्तम है। और रजोदर्शन के दिन से लेके 16 वीं रात्रि को पश्चात् न समागम करना। पुनः जब तक ऋतुदान का समय पूर्वोक्त न आवे तक और गर्भस्थिति के पश्चात् एक वर्ष तक संयुक्त न हों। जब दोनों के शरीर मे आरोग्य परस्पर प्रसन्नता किसी प्रकार का शोक न हो। जैसा चरक और सुश्रुत में भोजन छादन का विधान और मनुस्मृति में स्त्री पुरूष की प्रसन्नता की रीति लिखी है उसी प्रकार करें और वर्ते। गर्भाधान के पश्चात् स्त्री को बहुत सावधानी से भोजन छादन करना चाहिए। पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त स्त्री पुरूष का संग न करें। बुद्धि बल, रूप आरोग्य, पराक्रम, शान्ति आदि गुणकारक द्रव्यों ही का सेवन स्त्री करती रहै कि जब तक सन्तान का जन्म न हो।

जब जन्म हो तब अच्छे सुगन्धियुक्त जल से बालक को स्नान, नाड़ीछेदन करके सुगन्धियुक्त घृतादि का होम और स्त्री के भी स्नान भोजन का यथायोग्य प्रबन्ध करे कि जिस से बालक और स्त्री का शरीर क्रमशः आरोग्य और पुष्ट होता जाय। ऐसा पदार्थ उस की माता वा धायीं खावें कि जिस से दूध में भी उत्तम गुण प्राप्त हों। प्रसूता का दूध छः दिन तक बालक को पिलावे। पश्चात् धायी पिलाया करे परन्तु धायी को उत्तम पदार्थो का खान पान माता पिता करावें। जो कोई दरिद्र हो धायी को न रख सके तो वे गाय वा बकरी के दूध में उत्तम औषधि जो कि बुद्धि पराक्रम आरोग्य करने हारी हो उनको शुद्ध जल में भिजा, औटा, छान के

दूध के समान जल मिलाके बालक को पिलावें। जन्म के पश्चात् बालक और उसकी माता को दूसरे स्थान जहाँ का वायु शुद्ध हो वहां रक्खें सुगन्ध तथा दर्शनीय पदार्थ भी रक्खे और उस देश में भ्रमण कराना उचित है कि जहां का वायु शुद्ध हो और जहां धायी, गाय बकरी आदि का दूध न मिल सके वहां जैसा उचित समझें वैसा करें। क्योंकि प्रसता स्त्री के शरीर के अंश से बालक का शरीर होता है इसी में स्त्री प्रसव समय निर्बल हो जाती है इसलिये प्रसूता स्त्री दूध न पिलावे दूध रोकने के लिये स्तन के छिद्र पर उस ओषधी का लेप करे जिससे दूध स्त्रवित न हो। ऐसे से दूसरे महीने में पुनरपि युवती हो जाती है। तब तक पुरूष ब्रह्मचर्य्य से वीर्य्य का निग्रह रक्खे। इस प्रकार जो स्त्री वा पुरूष करेंगे उनके उत्तम सन्तान दीर्घायु, बल पराक्रम की वृद्धि होती ही रहेगी कि जिससे सब सन्तान उत्तम बल, पराक्रमयुक्त दीर्घाय, धार्मिक हों। स्त्री योनिसंकोच, शोधन और पुरूष वीर्य्य का स्तम्भन करे। पुनः सन्तान जितने होंगे वे भी सब उत्तम होंगे।

बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करें, जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगें तब उसकी माता बालक की जिहा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे कि जो जिस वर्ण का स्थान, प्रयत्न अर्थात् जैसे 'प' इसका ओष्ठ स्थान और स्पृष्ट प्रयत्न दोनों ओष्ठों को मिलाकर बोलना हस्व दीर्घ प्लुत अक्षरों को ठीक ठीक बोल सकना। मधुर गम्भीर, सुन्दर स्वर, अक्षर मात्रा पद वाक्य संहिता अवसान भिन्न भिन्न श्रवण होवे। जब वह कुछ–कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े छोटे मान्य पिता माता राजा विद्वान आदि से भाषण उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करें जिस से कहीं उन का अयोग्य व्यवहार न हो के सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करें। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय विद्याप्रिय और सत्संग में रूचि करें वैसा करते रहें। व्यर्थ क्रीडा रोदन हास्य लड़ाई हर्ष शोक किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या न करें।उपस्थेन्द्रिय से स्पर्श और मर्दन से वीर्य की क्षीणता, नपुंसकता होती और हस्त में दुर्गन्ध भी होता है इससे उसका स्पर्श न करें। सदा सत्यभाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो करावें।

जब पांच पांच वर्ष के लड़का लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी उसके पश्चात् जिन से अच्छी शिक्षा, विद्या धर्म परमेश्वर माता पिता आचार्य विद्वान अतिथि राजा प्रजा, कुदुम्ब बन्धु भगिनी, भृत्य आदि से कैसे कैसे वर्त्तना इन बातों के मन्त्र श्लोक सूत्र, गद्य पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिन से सन्तान किसी धूर्त के बहकाने मे न आवें और जो जो विद्या, धर्मविरूद्ध भ्रान्तिजाल में गिराने वाले व्यवहार हैं उन का भी उपदेश कर दें जिस से भूत प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्। प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुदध्यति।।

अर्थ– जब गुरू का प्राणान्त हो तब मृतकशरीर जिस का नाम प्रेत है उस का दाह करनेहारा शिष्य प्रेतहार अर्थात् मृतक को उठाने वालों का साथ दशवें दिन शुद्ध होता है।

और जब उस शरीर का दाह हो चुका तब उस का नाम भूत होता है अर्थात् वह अमुकनामा पुरूष था जितने उत्पन्न हों वर्तमान में आ के न रहें वे भूतस्थ होने से उन का नाम भूत है। ऐसा ब्रह्म से लेके आज पर्यन्त के विद्वानों का सिद्धान्त है परन्तु जिस को शंका कुसंग–कुसंस्कार होता है उस को भय और शंकारूप भूत प्रेत शाकिनी डाकिनी आदि अनेक भ्रमजाल दुःखदायक होते हैं।

क्रमशः अगले अंक में.....

www.thearyasamaj.org

वेदवेदांगों मे पारंगत युग की प्रथम महिला वेद उपदेशिका एवं विश्व की प्रथम महिला वेदाचार्या विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी

वेदभारती डा0 सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या का जीवन दर्शन

डॉ श्वेत केतु शर्मा सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति भारत सरकार

वेदाचार्या तु सावित्री धर्मशास्त्रे विचक्षणः, शास्त्रार्थ करणे दक्षः भाषणे तु सरस्वती।

वेदमयी बदायूं जनपद के पटियाली सराय क्षेत्र में ब्राह्मण परिवार के वैदिक दार्शनिक विद्वान पं0राम स्वरूप पाराशरी एवं माता सुशीला देवी जी के पवित्र संरक्षण में अपनी चार पुत्रियों एवं दो पुत्रों में चतुर्थ श्रेणी की संतान वेद भारती डा0 सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या थी। बाल्यावस्था से ही आपका ध्यान अध्ययन व अध्यापन में ही रहता था। पार्वती आर्य कन्या संस्कृत विद्यालय बदायूं में प्रारम्भिक शिक्षा का शुभारम्भ हुआ। अध्ययन के अतिरिक्त आपकी किसी भी कार्य में रूचि न थी। आपकी सखियाँ भी पठन–पाठन का ही चिन्तन करती थी। विद्याध्ययन की अत्यधिक रूची होने से अपने पिता की भी परम प्रिय थी।

प्रथम कक्षा से ही अपने माता पिता की लाडली एवं गुरूओं की भी आकर्षण की केन्द्र रहीं प्रथम कक्षा में प्रथम स्थान पाने पर पुरस्कार स्वरूप अपने पिता से आर्शीवाद प्राप्त किया कि अच्छे संस्कारों से भारतीय संस्कृति से ओत प्रोत संस्कृत भाषा के अध्ययन से वेद वेदांगों के ज्ञान को प्राप्त करों उसी का फल था आज देश विदेशों में पारंगत विख्यात युग की प्रथम महिला वेद उपदेशिका व विश्व की प्रथम महिला वेदाचार्या तथा विश्व क चतुर्थ आर्य महिला विदुषी के रूप में जाना जाता है।

15 अप्रैल 1932 में जन्मी वेदाचार्या सावित्री शर्मा ने अपना शैक्षिक जीवन दार्शनिक पिता की प्रेरणा से संस्कृत भाषा से ही प्रारम्भ किया।

शैक्षिक जीवन वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से प्रथमाः, पूर्वमध्यमा उत्तर

मध्यमा कक्षा से अपनी शिक्षा प्रारम्भ की थी, यह वह समय था जब बालिकाओं या महिलाओं का न तो घर से निकाला जाता था और न ही स्कूलों में बालिकाओं को बढ़ने भेजा जाता था, महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा से वालिकाओं के कुछ विद्यालय व गुरूकुल प्रारम्भ हुये थे, उनमें भी प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करवाकर बालिकाओं को घर पर बैठा दिया जाता था, ऐसे समय में वेदाचार्या वावित्री ने हाईस्कूल व इन्टरमीडिएट की परीक्षायें भी अंग्रेजी विषय को लेकर 1947–48 में प्रथम श्रेणी में उर्तीण की थी। इसी के साथ अपना गौरवान्वित शैक्षिक जीवन का प्रारम्भ हुआ–

–वीर हकीकत राय व अन्य महापुरूषों पर नाटक अप्रकाशित

–सावित्री सूक्ति सौन्दर्य –स्वरचित सूक्तियों का संग्रह वेद भारती प्रकाशन बरेली

प्रकाशन–

आपके अनेको लेख, कवितायें वेद व दर्शनो पर सारगर्भित लेख राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

आर्यमित्र आर्यजगत, आर्य मर्यादा, आर्य, संकल्प, सार्वदेशिक, भारतोदयाः, गाण्डीवम्, सर्पगन्धा, पारिजातम्, पवमान, परोपकारी वेद पथ वेदज्योति, वेद प्रदीप (नासिक), अर्न्तराष्ट्रीय वेदपीठ (शोध पत्रिका), अमर उजाला, बरेली, दैनिक जागरण, बरेली, आदि में प्रकाशित हो चुके है।

आकाशवाणी व दूरदर्शन से प्रसाण–

आकाशवाणी रामपुर के संस्कृत कार्यक्रम का शुभारम्भ आपके करकमलों द्वारा किया गया था, आपके अनेकों संस्कृत काव्य आकाशवाणी रामपुर से प्रसारित हो चुके है आकाशवाणी बरेली के प्रारम्भ होने के उपरान्त आपका साक्षात्कार तथा हिन्दी संस्कृत काव्य प्रसारित हो चुका है, दूरदर्शन बरेली से भी आपका साक्षात्कार व हिन्दी संस्कृत काव्य प्रसारित हुये थे।

विवाह–

ग्रम दौली जिला बरेली के प्रसिद्ध ब्राह्मण परिवार में पं0 बलदेव प्रसाद शर्मा के सुपुत्र डा0 सरेन्द्र शर्मा से विवाह सम्पन्न हुआ। डा0 सुरेन्द्र शर्मा राजकीय सेवा में चिकित्साधिकारी के पद से अवकाश प्राप्त हुये थे तथा आयुर्वेद एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, जिन्होंने समाज वे देश के लिये अपूर्व योगदान दिया था। जिनकी प्रेरणा एवं सहयोग से ही वेदाचार्या डा0 सावित्री शर्मा विश्व विख्यात महिला वेद विदुषी के रूप मे प्रसिद्ध हुयी। महर्षि दयानन्द के प्रार्दुभाव के पश्चात् देश में स्त्रियों की शिक्षा व वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त हुआ, इससे पूर्व " स्त्री शूदो न दीयताम्" के वाक्य के आधार पर शिक्षा व वेद पढ़ने के अधिकार से स्त्रियों को वंचित रखा परन्तु ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर कहा कि "यत्र नारियस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात जहाँ नारियों का सम्मान होता है, शिक्षित होती हे वह राष्ट्र समाज व परिवार श्रेष्ठ व उन्नतिशील होता है इसीलिये ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों की शिक्षा व वेद पढ़ने का अधिकार प्रदान किया। इसी के बाद देश मे स्त्रियों की शिक्षा का प्रचलन तीव्रता से प्रारम्भ हुआ, स्त्रियों ने वेद पढ़ना प्रारम्भ किये। ऋषि दयानन्द के बाद स्त्रियों न वेदों का अध्ययन अत्यन्त गम्भीरता से किया तथा विदुषी के रूप मेंउनको जाना जाता भी रहा परन्तु सर्वाजनिक वेद प्रचार का साहस नहीं कर पायीं, इस युग में ऋषि दयानन्द के बाद महिलाओं में यह साहस कोई भी महिला नहीं कर पाई।

सर्व प्रथम वेदाचार्या डा0 सावित्री जी ने 20 वर्ष की अल्प में 1950 ई में अपने दार्शनिक पिता की प्रेरणा से वेद के प्रचार को प्रारम्भ किया और उसके बाद देश के कोने कोने में कोई ऐसा स्थान न छोड़ा जहाँ वेदों के संदेश को जनता जनार्दन तक न पहुँचया हो, आप ही की समकालीन पाणिनी कन्या महाविद्यालय की संस्थापिका आचार्या प्रज्ञा जी थी, जो आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिये महिला के रूप में आगे आयी थी, जिन्होंने स्त्री शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य किया था। वेदाचार्या सावित्री जी युग की प्रथम महिला वेद प्रचारिका के रूप प्रसिद्ध हुई। आपके बाद ही लाखों की संख्या में महिलाओं ने शिक्षा ग्रहण की थी, बालिकाओं के विद्यालय खोले गये, और आज हजारों की संख्या में महिलायें वेदों के अध्ययन व प्रचार में लगी है।

विश्व की प्रथम वेदाचार्या–

महर्षि दयानन्द जी के बाद महिलाओं को वेदों को पढ़ने का अधिकार मिल गया था परन्तु वेदों की परीक्षायें देने का अधिकार नहीं प्राप्त हुआ था अर्थात् यदि महिलायें वेदाचार्या की परीक्षा देना चाहे तो उनके लिये अनेकों व्यवधान लगाये जाते थे, यही स्थिति आचार्या सावित्री जी के साथ थी। सवित्री जी ने सर्वप्रथम सम्पूर्णनन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी मे वेदाचार्या की परीक्षा देने के लिये आवेदन किया तो वेद विभाग के विभागाध्यक्ष महोदय ने अनेकों आपत्तियाँ लगा कर आवेदन अस्वीकृत कर दिया था, परन्तु बाद मे आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं0 बिहारी लाल शास्त्री जी, जो सावित्री जी के ताऊ जी थे, ने स्वयं विश्वविद्यालय जाकर अनेकों तर्क व प्रमाणों से उनकी आपत्तियों को खारिज कर दिया, अन्त में विश्वविद्यालय को सावित्री जी के लिये वेदाचार्या की परीक्षा मे बैठने की अनुमति प्रदान करनी पढ़ी, और उन्होने कठिन परिश्रम करके विश्व प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया, विश्वविद्यालय ने उन्हें इस उपलक्ष्य में स्वर्ण पदक प्रदान करके सम्मानित किया, तथा विश्व में प्रथम महिला वेदाचार्या के रूप में विख्यात हुई।

विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी–

डा0 सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी को विश्व में चतुर्थ आर्य महिला विदुषी होने का गौरव प्राप्त हुआ है। आर्य समाज सिंगापुर न विश्व स्तर पर एक सर्वेक्षण कराया और उस सर्वेक्षण में विश्व की 10 आर्य महिला विदुषियों को निश्चित किया था तथा उन महिला विदुषियों का नाम एक विशाल शिलपट पर लिख कर आर्यसमाज सिंगापुर, लिंगन स्ट्रीट में लगा हुआ है, जिसमें डा0 सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी का नाम चतुर्थ स्थान पर लिखा है। विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी के रूप मे गोरव प्राप्त हुआ है।

अनुशासन प्रिय–

उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन से लेकर परिवार, विद्यालय समाज में अनुशासित होने का संदेश दिया। सर्वप्रथम अपने जीवन को पति की आज्ञा में अनुशासित किया अर्थात अपना प्रत्येक कार्य बिना पति का आज्ञा के बिना नहीं किया, भारतीयता के परिवेश में अपने को ढालते हुये स्वयं को समाज व परिवार के प्रति अनुशासित रखा आर्य समाज एवं देश के विभिन्न सामाजिक राजनैतिक व आध्यात्मिक कार्यक्रमों मे पति की आज्ञा से जाना, पति के साथ स पुत्रों के साथ यात्रा करना तथा इन्हीं के साथ कार्यक्रमों में जाना उनका मुख्य नियम था, बच्चों को प्यार, बड़ों का सम्मान, स्वाभिमान व सदाचार की रक्षा का संकल्प जीवन भर रहा, जीवन के अन्तिम क्षण तक भारतीय वेश भूषा व संस्कारों में अपने को अनुशासित रखा।

ऋषि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार–

पारिवारिक पृष्ठभूमि से ही ऋषि दयानन्द के विचारों से प्रभावित रहीं, सत्यार्थ प्रकाश ने आपकी बुद्धि को परिपक्व किया। किसी भी कार्य को करने से पहले सत्य व असत्य का विवेचन करके ही अपने जीवन मे अवतरित किया एवं समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया, देश भर में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया, गांव गांव नगर में लोगों को बौद्धिक दृष्टि से सतर्क रहने को कहा अन्धविश्वास, कुरीतियों को दूर भगाने का संकल्प लिया, इसलिये आम नागरिक को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का आवाहन किया। वेद के मंत्रों को सरल व्याख्यानों से समाज को समझाने का प्रयास किया 'स्त्री शूद्रो न दीयताम् का घोर विरोध किया तथा प्रत्येक स्त्री को वेद पढ़ने का पूर्ण अधिकार प्रदान किया, स्वयं भी वेदाचार्या बन के यह दिखा दिया कि स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन करके समाज को उपदेश कर सकती है। नारी के महत्व को विशेष स्थान दिया, नारी शिक्षा के बिना परिवार का उत्थान असम्भव है, इन विचारों को जन जागृति अभियान से सामाजिक चेतना प्रदान की थी।

वेद के प्रचार को महत्व दिया। स्वदेश वासियों से कहा कि वेद की ओर लौटो, उसके तत्व ज्ञान की सरल व्याख्या की, इसीलिये शास्त्रार्थ महारथी पं0 बिहारी लाल शास्त्री जी ने वैदिक व्याख्यानों व सिद्धान्तों मे पारंगत डा0 सावित्री देवी शर्मा वेदाचार्या जी को वेदभारती की उपाधि से विभूषित किया था। सन् 1952 से 2005 तक 53 वर्ष आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक धाम्रिक संगठनों में जहाँ कही भी वेद प्रचार व उपदेश देने की आवश्यकता हुई तो देश के कोने–कोने में अपने ज्ञान से लाभान्वित किया। वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार अत्यन्त तन्मयता से किये, देश के विभिन्न प्रान्तों उ0 प्र0, म0 प्र0 बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्कल, महाराट्र राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, चण्डीगढ़, गुजरात तथा दक्षिण के कुछ प्रान्तों में जहां जहां आर्य समाजें सक्रिय हैं, आदि स्थानों पर विशेष रूप से घनघोर प्रचार किया, इन सभी स्थानों पर आपकी अत्यन्त मान्यता तथा प्रभाव था। विशेष रूप से ऋषि दयानन्द व आर्य समाज के वैदिक सिद्धान्तों को सरल शब्दों में जनमानस तक पहुँचाना आपका उद्देश्य रहा, ' निष्कारणं ब्राह्मणें न ऋड..... वेदोडध्येयोज्ञे य' इस मनु वाणी को सार्थक करने में कृत संकल्प रहीं शास्त्रार्थ में पारंगत –वैदिक सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ करने सर्वदा तत्पर रही। वेद विरूद्ध एवं अन्धविश्वास को प्रश्रय देने वालों को सदा अपनी तार्किक वृद्धि से परास्त किया। निम्न स्थानों पर आपके द्वारा किया गया शास्त्रार्थ इतिहास बन गया।

नारी सुधार में महत्वपूर्ण योगदान–

आपने अपने जीवन मे नारी सुधार पर विशेष बल दिया, स्त्रियों को शिक्षा के माध्यम से सुधार, आपने प्रारम्भ से ही समाज में ऐसी पथ भ्रष्ट जो अशिक्षित, असहाय, असमर्थ व धन के लोभ में अश्लील तथा समाज के द्वारा अवंछनीय कार्य में लिप्त महिलाओं को उस वातावरण से निकाल कर अपने विद्यालय में शिक्षित करने के लिये प्रवेश कराया, ऐसी अनेको महिलायें शिक्षिकायें एवं अनेकों उच्च पदों पर कार्य कर रही है।

आपका यह कार्य अल्प अवस्था में जब आप पार्वती आर्य कन्या कालेज में प्रधानाचार्या के पद पर आसीन थी, उस समय जहाँ नारियों को समाज भोग विलास का मात्र साधन मानता था, उस सामाजिक दुर्दशा से दुःखित होकर उन महिलाओं को उन दुष्कृत्यों से दूर करके सभ्य समाज में रहने योग्य उनके जीवन को श्रेष्ठ शिक्षित बनाया, जिन्होंने बाद में सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित की थी।

आपने शिक्षा, वेशभूषा, आचरण, अनुशासन एवं कर्तव्यनिष्ठा से बालिकाओं स्त्रियों महिलाओं के सुधार के लिये विद्यालयों में प्रवचनों, उपदेशों तथा साहित्य लेखन द्वारा अनेकों सुधारात्मक कार्य किये। आपके जीवन मे वेदों का पठन पाठन, वेदोपदेश तथा वेदों के पढ़ने की प्रेरणा देना तथा सरल भाषा में वेदों के तत्व ज्ञान से ओतप्रोत करना रहा। आप ही महर्षि दयानन्द के बाद महिलाओं में प्रथम ऐसी विदुषी महिला थी, जिन्होंने सर्वप्रथम इस युग मे वेदों का अध्ययन किया, वेदों पर प्रवचन व उपदेश दिये, वेदों के चिन्तन को लेखन के माध्यम से समाज को नवीन ज्योति प्रदान की थी, इसलिये आप युग की प्रथम महिला वेद प्रचारिका के रूप में प्रसिद्ध हुयी। आप ही के बाद देश में महिलाओं द्वारा वेद के पठन पाठन व शिक्षा का दौर प्रारम्भ हुआ और आज देश में हजारों की संख्या में बालिकाओं के विद्यालय, गुरूकुल चल रहे है। आप की इस परम्परा के उपरान्त ही अनेकों विदुषी महिलाओं ने वेदों का अध्ययन करके वेदोपदेश व प्रचार प्रारम्भ किया। समाज को भारतीयता के परिपेक्ष में ढालने का प्रयास कर रही है।

वेद वेदांगों की प्रकाण्ड विदुषी विश्व की प्रथम वेदाचार्या, विश्व की चतुर्थ आर्य महिला विदुषी तथा युग की प्रथम महिला आर्य उपदेशिका ने संसार को आत्मसात करके, श्रेष्ठ वैदिक ज्ञान में पिरो कर, विश्व को जन कल्याण को उपदेश देकर अस्ताचल की ओर चल पड़ी। दैनिक जागरण ने प्रकाशित किया 'देव भाषा का ध्रुव तारा अस्त' तथा अमर उजाला ने लिखा 'प्रेमी कभी न थकता जग में प्रिय चाहें थक जाये' के साथ राष्ट्र कल्याण के भावों को रोम–रोम में बसा गई, युगों तक उनकी स्मृतियाँ नवीन चेतना प्रदान करती रहेंगी।

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे.....

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

-सूर्य देव चौधरी

वन्दमान शब्द उसी की ओर संकेत कर रहा है।

घर का दूसरा प्रधान सदस्य माता है। माता ही बच्चे अथवा संतान का निर्माण करती है। इसीलिए कहा गया है- माता निर्माता भवति। गृह-पालन में पिता और माता दोनों की भूमिका होती है। इसलिए पिता के साथ माता के भी अपने कर्त्तव्य हैं। अपने कर्त्तव्य पालन करने के लिए माता में जिन गुणों का समावेश होना चाहिए, उसका वर्णन करते हुए वेद में कहा गया है-

अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिक्षा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।

वीरसूर्देवृकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। (ऋ. १०. ८५.४४)

हे स्त्री ! तू प्रियदृष्टिवाली, पति से विरोध न करने वाली, मंगल करने वाली सब पशुओं का सुखदाता, पवित्र एवं प्रसन्न मनवाली, सुन्दर कर्म एवं विद्या से प्रकाशित, वीर संतानों को जन्म देने वाली, देवर की कामना करती हुई अर्थात् आपात् स्थिति में नियोग की भी इच्छा करने वाली, सुखयुक्त होकर घर के मनुष्यों एवं पशुओं के लिए सुखकारी हो।

अब हम देखते है कि एक स्त्री को माता के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में ये गुण किस प्रकार सहायक होते हैं। माता का पहला गुण अघोरचक्षु कहा गया है। उसमें सदा क्रूरदृष्टि का अभाव होना चाहिए। उसकी वाणी में स्नेह और प्रेम दृष्टि गोचर होने चाहिए। उसके व्यवहार में ममता होनी चाहिए। उसके मुख मंडल पर सदा प्रसन्नता झलकनी चाहिए। वह प्रिय बोलने वाली हो।

माता के ये सभी गुण अघोरचक्षु शब्द से निर्दिष्ट है। माता का दूसरा गुण अपतिघ्नि है। माता को पत्नी के रूप में पति से कभी विरोध नहीं करना चाहिए। पति-पत्नी में विरोध होने से घर में कलह होता है और यह स्वर्ग-धाम के स्थान पर नरक बन जाता है। संतानों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। अपतिघ्नि शब्द यह संकेत करता है कि पत्नी कोई भी ऐसा काम न करे जिससे उसके पति की आयु, जीवन और यश का नाश हो। माता की तीसरा गुण शिवा है। शिव शब्द का अर्थ कल्याणकारी होता है। अतः स्त्री को माता के रूप में सबका कल्याण करने वाली होनी चाहिए। वेद कहता है -

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा।

शिवास्मै सवस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि।। (अथर्व ३/२८/३)

हे मातृशक्ति ! तू घर के सभी पुरुषों, गौओं, अश्वों और इस पूरे घर एवं सबके लिए कल्याणकारिणी हो।

माता का चौथा गुण सुमना है। माता को उत्तम, प्रसन्न एवं उदार मना होना चाहिए। संतान पर सबसे अधिक प्रभाव माता के व्यवहार का पड़ता है। यदि माता उत्तम एवं पवित्र मनवाली होगी तो संतान भी उत्तम चरित्र एवं पवित्र मनवाला होगा। अतः माता को सुमना होना ही चाहिए। माता का पाँचवां गुण सुवर्चाः है। माता को शुभकर्म एवं उत्तम विद्या के तेज से प्रकाशित होना चाहिए। तभी वह अपने संतानों को सुशिक्षित कर सकती है। एक अनपढ़ एवं अशिक्षित माता विद्या के महत्त्व को नहीं समझ सकती। इसलिए माता का सुवर्चा होना आवश्यक है। माता के छठे गुण के लिए मंत्र में वीरसूः शब्द आया है। वीरसू शब्द के अर्थ वीर संतान उत्पन्न करने वाली होता है। यह वीर भोग्या वसुंधरा है। अतः स्वयं दुर्बल होना और दुर्बल संतान पैदा करना पाप है। किसी ने ठीक ही कहा है - It is sin to beget weak children इस सत्य को वैदिक गृहस्थाश्रम की माता समझती है। इसलिए वह घोषणा करती है -

ममपुत्राः शत्रुहणोऽथो में दुहिता विराट्। (ऋ. १०-१५९-३)

मेरे पुत्र शत्रुओं का नाश करने वाले हैं और मेरी पुत्री अत्यन्त तेजस्विनी है। अतः एक माता को वीर प्रसविनी होना ही चाहिए और इसके लिए आवश्यक है कि वह गर्भकाल में विशेष नियमों का पालन करे और वीर चरित्र को अपने स्वाध्याय का अंग बनाए। माता के मातृत्व की महत्ता वीर संतान को जन्म देने में ही है, अन्यथा मातृत्वहीनता ही अच्छी है, जैसा कि एक कवि ने कहा है -

जननि जन तो भक्त जन या दाता या शूर।

नहीं तो जननि बांझ रह, व्यर्थ न गवाँ तू नूर।।

इसलिए मंत्र में माता का एक गुण 'वीरसू' यानी वीर - प्रसविनी कहा गया है।

माता का एक अन्य गुण 'देवृकामा' है। देवृकामा का अर्थ है -देवर की इच्छा करने वाली। सामान्य प्रचलन में देवर का अर्थ पति का छोटा भाई माना जाता है, लेकिन निरुक्त में नियुक्त पति को देवर की संज्ञा दी गई है- 'देवरः कस्मात् द्वितीय वर उच्यते'। संतान हीनता अथवा वंशोच्छेद जैसी आपात् स्थिति में संतानोत्पति के लिए की गई व्यवस्था का नाम नियोग है।

माता का अन्तिम गुण स्योना है। स्योना का अर्थ सुख-युक्त एवं सुखदायिनी है। एक आदर्श माता घर में सबके लिए सुखकारिणी होती है। इसलिए वेद ने कहा है -

स्योना भव श्वसुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहेभ्यः।

स्योनाऽस्यै सर्वस्यै विशे स्योना पुष्टायैषां भव।। (अथर्व १४-२-२७)

हे स्त्री! तू श्वसुर, पति और घर के सभी जनो के लिए सुखकारिणी हो। सभी प्रजा-समूह के लिए सुखदायिनी होती हुई इन सबको सुखी एवं पुष्ट करने वाली बन।

इस तरह इन आठ गुणों से युक्त माता को आदर्श माता कह सकते हैं।

इसके बाद गृहस्थाश्रम में पुत्र का स्थान आता है। पुत्र अथवा संतान के निर्माण में माता-पिता अनेक कष्ट उठाते हैं, जिसका वर्णन करते हुए मनुजी ने कहा है।

यं माता पितरौ कलेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।

न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि।। (मनु. २/२२७)

मनुष्यों के निर्माण में (गर्भ-धारण, प्रसव-वेदना, पालन-पोषण और शिक्षण आदि में) माता-पिता जिस कष्ट को सहते हैं, उसका बदला सैकड़ों वर्षो में भी नहीं चुकाया जा सकता। अतः माता-पिता के प्रति पुत्र का कर्त्तव्य है कि वह उन्हें हर सम्भव सुख प्रदान करे। माता-पिता के प्रति पुत्र के कर्त्तव्यों का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (३/३०/२) में कहा गया है-

अनुव्रतो पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः।

पुत्र पिता के अनुव्रती हो और माता के साथ समान एवं प्रीतियुक्त मनवाला हो।

वैदिक संस्कृति में पिता को देवता तुल्य माना गया है। इसलिए उपनिषदों में कहा गया है- 'पितृ देवो भव' अर्थात् पिता देवता है। अन्यत्र महाभारत के वन पर्व (३/३/६०) में कहा गया है- 'स्वत् पितोच्चतरस्तथा अर्थात् पिता आकाश से अधिक ऊँचा है। इसलिए मंत्र में कहा गया कि पुत्र इस देव-तुल्य पिता का अनुव्रती हो। अनुव्रती का अर्थ है- व्रत यानी सत्कर्म एवं सत्संकल्पों का अनुगामी। पिता में यदि कोई दुर्गुण हो तो पुत्र उसका अनुसरण न करे। इसलिए मंत्र में अनुव्रत शब्द का प्रयोग किया गया है।

पुत्र का दूसरा कर्त्तव्य है- माता के प्रति समान एवं प्रीतियुक्त मनवाला होना। माता संतान के जन्म एवं पालन में जितना कष्ट सहती है उसको माता के अतिरिक्त और कोई नहीं समझ सकता। इसलिए महाभारत वनपर्व ३/३/६० में कहा गया है- 'माता गुरुतरा भूमेः' अर्थात् माता पृथिवी से भारी है। तात्पर्य यह है कि पृथिवी की तरह माता के हृदय का माप-तोल नहीं किया जा सकता। अन्यत्र माता की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा गया है- 'जननि जन्मभूमिश्च स्वर्गादीप गरीयसी अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्ग से महान है। इसका कारण है कि माता से प्राप्त सुखों की तुलना स्वर्ग के सुखो से नहीं की जा सकती। इसलिए उपनिषद ने कहा - मातृदेवो भव अर्थात् माता देवता है। इसलिए माता के साथ समान एवं प्रीतियुक्त मनवाला होना पुत्र का कर्त्तव्य बतलाया गया है।

माता और पिता की महानता और उनके प्रति पुत्र के कर्त्तव्य का वर्णन करते हुए पद्मपुराण में कहा गया है -

सर्वतीर्थमयी माता सर्व देवमयः पिता।

मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।। (पद्मसृष्टि ४७-१२)

माता सर्व तीर्थमयी है अर्थात् सब दुखों से तारने वाली है और पिता सभी देवताओं का रूप है। इसलिए प्रयत्नपूर्वक सभी प्रकार से माता-पिता का पूजन अर्थात् आदर-सत्कार करना चाहिए।

माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाले पुत्र में किन गुणों का समावेश होना चाहिए, इसका वर्णन करते हुए ऋग्वेद के दसवें मंडल के सैंतालीसवे सूक्त में है। इस सूक्त में इन्द्र अर्थात् ऐश्वर्यशाली परमात्मा से पुत्र रूपी धन (रयि) की प्रार्थना की गई है। जरा अवलोकन करें -

स्वामुधं स्ववसं सुनीथम् चतुःसमुद्रं धरूणं रयीणाम्।

चकृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिंदा।। (ऋ. १०-४७-२)

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन् ! आप हमें ऐसा विचित्र गुणों से युक्त पुत्र रूपी धन दो, जो उत्तम शस्त्रज्ञ एवं योद्धा हो, सुरक्षक हो, नीति-निपुण एवं सदाचारी हो, चारो ज्ञान-समुद्र यानी वेदों का ज्ञाता हो, अनेक प्रकार के धनों का धारक हो, कर्मशील हो, प्रशंसनीय जीवनवाला हो तथा कष्टों को दूर करने वाला और कल्याण की वर्षा करने वाला हो।

प्रत्येक माता-पिता की यह कामना होनी चाहिए कि हमारा पुत्र इन गुणों से युक्त हो और एक आदर्श पुत्र को अपने जीवन में प्रयत्नपूर्वक इन गुणों का विकास करना चाहिए। एक गुणवान् पुत्र सुगंधित पुष्प की तरह सम्मान पाता है, जब कि गुणहीन पुत्र की समाज में कद्र नहीं होती। इसलिए गुणवान पुत्र को श्रेष्ठ कहा गया है -

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्ख शतान्यपि।

एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि।।

एक ही गुणवान पुत्र श्रेष्ठ है, सैकड़ों मूर्ख पुत्र नहीं, क्योंकि एक ही चन्द्रमा रात के अंधेरे को दूर करता है, ताराओं का समूह नहीं।

इसके अतिरिक्त गृहस्थ स्त्री-पुरुष के कुछ और कर्त्तव्य हैं, जिन्हें पंच महायज्ञ के नाम से जाना जाता है। महर्षि मनु ने लिखा है -

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।

नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्।। (मनु. ४/२)

प्रत्येक गृहस्थ स्त्री पुरुष को प्रतिदिन ऋषियज्ञ (ब्रह्मयज्ञ), देवयज्ञ, भूतयज्ञ (बलिवैश्व यज्ञ), नृयज्ञ (अतिथि यज्ञ) एवं पितृयज्ञ, ये पांच महायज्ञ यथाशक्ति करना चाहिए।

संध्या करना, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना पढ़ना एवं पढ़ाना ब्रह्मयज्ञ के अन्तर्गत आता है। प्रत्येक गृहस्थ स्त्री-पुरुष का यह दैनिक कर्त्तव्य है कि दोनों समय संध्या बेला में जगन्नियन्ता परब्रह्म परमेश्वर की उपासना करे। तत्पश्चात् वेदादि सत्य ग्रंथों का स्वाध्याय करे और यथाशक्ति दूसरों को भी पढ़ाए। ब्रह्मयज्ञ का महत्त्व यह है कि ईश्वर की उपासना और उसके गुणों के चिंतन से मनुष्य पापकर्म में प्रवृत नहीं होता और स्वाध्याय से विद्या, शिक्षा, धर्म सभ्यता आदि शुभ गुणों की वृद्धि होती है।

ब्रह्मयज्ञ के बाद देव यज्ञ का स्थान आता है। इसको अग्निहोत्र भी कहते हैं। अग्निहोत्र में दैनिक यज्ञ से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त सभी यज्ञ शामिल है। घृतादि सुगंधित पदार्थो को अग्नि में होम करना अग्निहोत्र कहलाता है। मनुष्य अपने अपरिहार्य दैनिक क्रिया-कलापों से वायुमंडल को जितना अशुद्ध करता है, उसके निवारण के लिए उसका दैनिक कर्त्तव्य है कि वह अग्निहोत्र के द्वारा उतना या उससे अधिक सुगंन्धित वायुमंडल में फैलाए। यह भी दोनों संध्या बेला में करना चाहिए। इसके अतिरिक्त विद्वानों की संगति भी दैवयज्ञ का अंग है क्योंकि शतपथ ब्रह्मण में कहा गया है- 'विद्वांसो हि देवाः' अर्थात् विद्वान् ही देव हैं। देवयज्ञ का महत्त्व यह है कि वायुमंडल शुद्ध रहे ताकि कोई रोग न फैले और सभी प्राणी निरोग एवं सुखी होकर जीवन-यापन करें। साथ ही विद्वानों की संगति से अज्ञान का नाश एवं ज्ञान का प्रकाश हो।

तीसरा पितृ यज्ञ है। इसके दो भेद हैं, एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। जीवित माता-पिता, गुरु एवं वृद्ध जनों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना श्राद्ध कहलाता है और जिन-जिन कर्मो से वे तृप्र या प्रसन्न हों, वे कर्म तर्पण कहलाते हैं। पितृयज्ञ का उद्देश्य ज्ञान-ग्रहण एवं कृतज्ञता-ज्ञापन है।

चौथा बलिवैश्य यज्ञ है। इसके भी दो भाग हैं, पहला भोज्य पदार्थो का होम एवं दूसरा उसका विभाग करना। पाकशाला में जो कुछ भोजन बनता है, उसमें खट्टा, नमकीन एवं क्षार को छोड़कर घृतमिष्ट युक्त भोजन को पाकशाला की अग्नि में होम करने का विधान है। फिर भोज्य पदार्थो में से अन्न का भाग निकाला जाता है। उस समय यदि कोई आ जाय तो, वह अन्न उसे खिला दिया जाता है और नहीं तो अग्नि में डाल दिया जाता है। इसके बाद कुत्ता, कंगाल, कुष्ट आदि रोगियों, कौवे आदि पक्षियों और चींटी आदि क्रीमियो के लिए अलग-अलग बाँटकर भोजन दिया जाता है। इसमें होम का प्रयोजन भोजनालय की वायु का शुद्धिकरण है, जबकि भोजन के भाग निकालने का प्रयोजन प्राणियों का प्रत्युपकार है।

पाँचवा अतिथि यज्ञ है। जिसकी आने की कोई तिथि निश्चित नहीं हो, उसको अतिथि कहते हैं। अकस्मात् आने वाले पूर्ण विद्वान, परोपकारी, धार्मिक, सत्यवादी, छल-कपट-रहित वैदिक संन्यासी को ही अतिथि कहते हैं। ये जब गृहस्थ के घर में आवें तो आसन, जल एवं भोजन से उनका समुचित सत्कार करें। इसके बाद उनसे ज्ञान-विज्ञान ग्रहण करके लाभ उठावें। उत्तम अतिथियों के सत्कार से जगत् में ज्ञान की वृद्धि होने से पाखंड एवं अंधविश्वास और अधर्म को पनपने का अवसर नहीं मिलता है। सर्वत्र धर्म एवं विज्ञान की वृद्धि होने से सभी सुखी रहते हैं।

शेष पृष्ठ-५ पर.....

www.thearyasamaj.org

हमारे स्वयं के हित में है जल व अन्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

कुछ दिन पहले एक विवाहोत्सव में जाना हुआ। भव्य आयोजन था। खाना शुरू करने से पहले हाथधोने के लिए पानी की तलाश की लेकिन कहीं पर भी पानी नहीं रखा गया था जहाँ सुविधापूर्वक हाथ धोए जा सकें। सब कुछ था सिवाय पानी के। पानी कहीं किसी जग या टंकी में उपलब्ध नहीं था लेकिन पानी की प्लास्टिक की बोतलें ज़रूर रखी थीं। 200 मिलि लीटर पानी से लेकर दो लीटर पानी तक की प्लास्टिक की बोतलें पर्याप्त संख्या में कई काउण्टरों पर सजी थीं। जिसको हाथ धोने होते वो सुविधानुसार हाथ बढ़ाकर कोई एक बोतल उठाता ढक्कन की सील तोड़ता और हाथों पर कुछ पानी डालकर शेष पानी से भरी बोतल वहीं रखें बड़े–बड़े टबों में फेंक देता।

टबों में ही नहीं चारों तरफ़ ढेर लगा था आंशिक रूप से प्रयुक्त पानी की बोतलों का। उनमें से निकल–निकल कर पानी चारों तरफ़ फैल रहा था और कीचड़ भी हो रहीं थी। आजकल जहाँ जाओ कमोबेश यही स्थिति दिखलाई पड़ती है। पानी और पीने योग्य पानी का ये हश्र देखकर जी दुखी हो जाता है। क्या पानी की इस बर्बादी इस अविवेकपूर्ण उपयोग को रोका नहीं जा सकता?क्या हाथ धोने के लिए सामान्य स्वच्छ जल टूटी लगे जग अथवा टंकियों में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता?यह असंभव नहीं लेकिन इसके संभव न होने के पीछे कई कारण हैं जो भयंकर हैं।

पेय जल का तो दुरूपयोग होता ही है साथ ही प्लास्टिक की बोतलों का भी बेतहाशा इस्तेमाल किया जा रहा है। हाथ धोने हैं तो एक बोतल, कुल्ला करना है तो दूसरी बोतल, भोजन के बीच में पानी पीना है तो तीसरी बोतल, भोजनोपरांत हाथ साफ करने हैं या पानी पीना है तो चौथी वा पाँचवीं बोतल..... इस तरह एक आदमी के लिए पाँच–सात बोतलों की सील तोड़न व उनमें उपलब्ध पानी की क्षमता का अत्यल्प प्रयोग अथवा दुरूपयोग करना सामान्य सी बात है। प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों का प्रयोग करना न केवल पर्यावरण के लिए घातक है अपितु इस्तेमाल करने वाले के लिए भी अस्वास्थ्यकर है इसीलिए प्लास्टिक के उपयोग को हतोत्साहित किया जाना अनिवार्य है।

आज हर जगह प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी को प्रोत्साहित किया जा रहा है। आज प्लास्टिक की बोतलों वा गिलासों पर कहीं भी कोई रोक–टोक नही। प्लास्टिक की बोतलों व गिलासों में बंद पानी के प्रयोग को प्रतिष्ठा का प्रतीक या स्टैंडर्ड माना जा रहा है। प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्रों को प्रतिष्ठित किया जा रहा है। एक एक फंकशन में कई–कई टैंपों या ट्रक भरकर प्लास्टिक की पानी की बोतलें व गिलास तथा प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित यूज एण्ड थ्रो पात्र प्रयोग में लाए जाते हैं। फंकशन खत्म होते–होते इस घातक कचरे के ढेर लग जाते हैं यह कचरा वज़न में अत्यंत हल्का होता है अतः इधर–उधर फिरता रहता है।

शहरों कस्बों गाँवों व समस्त पृथ्वी के सौदर्य पर कलंक–सा यह कचरा सचमुच त्याज्य है। आज बड़े–बड़े शहरों में ही नहीं कस्बों और गाँवों तक में कूड़े का सही ढंग से निपटारा करना एक बड़ी समस्या हो गई है। कुछ आर्थिक व औद्योगिक विकास की आवश्यकता तथा कुछ बढ़ते बाज़ारबाद के कारण आज हमारे उपभोग की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। वस्तुओं की संख्या और मात्रा दोनों में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही है। यूज़ एण्ड थ्रो संस्कृति के कारण तो स्थिति और भी भयावह होती जा रही है। बढ़ते औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का अपरिमित दोहन किया जा रहा है जो हमारे परिवेश होती जा रही है बढ़ते औद्योगीकरण के कारण संसाधनों का अपरिमित दोहन किया जा रहा है जो हमारे परिवेश और प्राकृतिक संतुलन के लिए घातक है।

क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित युज एण्ड थ्रो पात्रों की जगह धातु, चीनी मिट्टी अथवा काँच के सुंदर व टिकाऊ, खाने–पीने में सुविधाजनक बर्तनों को इस्तेमाल नहीं किया जा सकता? क्या प्लास्टिक, थर्मोकोल अथवा एल्युमीनियम फॉयल से निर्मित युज एण्ड थ्रो पात्रों की जगह प्राकृतिक सामग्री जैसे पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग संभव नहीं?क्या पत्तों से निर्मित पत्तल व दोनों का प्रयोग परिवेश के लिए अनुकूल व सुरक्षित नही?क्या इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का सृजन संभव नही? क्या इससे प्रकृतिक संसाधनों के दोहन मे कमी द्वारा औद्योगीकरण के दुष्परिणामों को कम करना संभव नही? क्या इससे अजैविक अथवा नष्ट न होने वाले कूड़े–कचरे के अंबार से मुक्ति संभव नहीं? कुछ भी असंभव नहीं यदि संतुलित दृष्टि व नेक इरादे से कार्य किया जाए।

क्या प्लास्टिक की बोतलों या गिलासों में बंद पानी की जगह टूटीवाले जगों या टंकियों में शुद्ध पेय जल उपलब्ध नहीं कराया जा सकता? कराया जा सकता है लेकिन दो, सौ, तीन सौ या हद से हद पाँच सौ रूपये के पानी के बीस–पच्चीस हज़ार रूपये तो नहीं बनाए जा सकते। ये घोर बाज़ारवाद, औद्योगीकरण व व्यावसायीकरण का परिणाम है जिसके कारण लगभग बिना कीमत वाला पानी जैसा पदार्थ भी न केवल सौ गुना से ज़्यादा कीमत पर बेचा जा रहा है अपतु पानी जैसे बेशकीमती पदार्थ की बर्बादी व प्रदषण के स्तर में बेतहाश वृद्धि हो रही है और लोगों के स्वास्थ्य से भी खिलावाड़ किया जा रहा है।

कई बार स्वच्छ जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर जो बोतलबंद पानी परोसा जाता है वास्तव में वह पीने के योग्य भी नहीं होता। उसमें से न केवल दुर्गध आती है अपितु कई बार खारापन अथवा स्वाद भी अजीब–सा होता है। शुद्ध स्वच्छ जल तो गंधहीन रंगहीन व किसी भी प्रकार के स्वाद से रहित तथा पारदर्शी होता है। शुद्ध जल अथवा मिनरल वॉटर के नाम पर प्रायः बोतल में बंद पानी ही होता है जिसकी गुणवत्ता कोई भरोसा नहीं। कई बार सीधे ज़मीन का कच्चा पानी जो पीना तो दूर अन्य प्रयोग के लिए भी उचित नहीं होता बोतलों में भर दिया जाता हैं।

कई बार बोतलबंद पानी इतना ख़राब होत है कि जो भी बोतल या गिलास खोलकर घूँट भरता है वह उसे गले से नीचे उतारने में असमर्थ होता है। वह न केवल भरी बोतल या गिलास डस्ट बिन में फैंकने को विवश होता है अपितु मुँह में लिए पानी को कुल्ला करके बाहर फैंकना भी उसके लिए ज़रूरी हो जाता है। यह न केवल लोगोां के स्वास्थ्य से खिलवाड़ है अपितु अनैतिकता व साफ़–साफ बेइमानी भी है। यह पानी का ही नहीं अन्य संसाधनों का भी दुरूपयोग है और प्रकृति व पर्यावरण के प्रति लापरवाही ही नहीं, गंभीर अपराध भी है।

देश में ही नहीं पूरे विश्व में पर्यावरण की स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। ऐसे में हमारे लिए अपने उपभोग को सीमित व नियंत्रित करना ही नहीं अपने उपभोग की दशा व दिशा को बदलना भी अनिवार्य प्रतीत होता है। यह हर तरह से हमारे हित में ही होगा। वस्तुओं का सही व संतुलित प्रयोग ही नहीं पुनर्प्रयोग भी समय की मांग है। जल का विवेकपूर्ण उपयोग तो और भी महत्त्वपर्ण हो जाता है। जल व अन्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग में ही निहित है प्रकृति का बचाव और पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति। यह तभी संभव है जब हम अपने व्यवहार के साथ–साथ अपनी मानसिकता को बदलकर उसे भी अधिकाधिक संतुलित व सकारात्मक बनाएँ।

सीताराम गुप्ता,
ए.डी.106–सी, पीतम पुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं 09555622323

पृष्ठ-४ का शेष.....

इस प्रकार अतिथि यज्ञ धर्म एवं सत्य के प्रचार के लिए आवश्यक है, लेकिन यह सच्चे अतिथियों से ही सम्भव है, ढोंगी अतिथियों से नहीं। ढोंगी अतिथियों के सत्कार से धर्म की हानि होती है और पाखंड एवं अंधविश्वास फैलते हैं। इसलिए मनुजी ने मनुस्मृति ४/३० में ऐसे पाखंडी, वेद-विरूद्ध कार्य करने वाले वैडालवृत्तिक, दुराग्रही, बकवादी, वकवृत्तिक यानी स्वार्थी और लोभी अतिथियों का वाणी मात्र से भी सत्कार नहीं करने के लिए लिखा है। इसलिए आवश्यक है कि गृहस्थ स्त्री-पुरुष अतिथियों को सूक्ष्म दृष्टि से भलीभांति परखने के बाद ही केवल सच्चे अतिथियों का ही सत्कार करे।

यदि प्रत्येक गृहस्थ इन दैनिक पंच महायज्ञों को प्रतिदिन यथाशक्ति करे और साथ ही गुण-कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को मानते हुए अपने-अपने वर्ण का कार्य समुचित ढंग से करे तो वैदिक स्वर्ग की अवधारण को मूर्त्त रूप लेने में देर नहीं लगेगी।

चारों वर्णो के गुण और कर्म मनुजी ने इस प्रकार निर्धारित किया है-

अध्यायनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्।। १
प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्व प्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।। २
पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।। ३
एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया।। ४ (मनु. १/८८-९१)

पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना तथा दान देना एवं लेना, ये छः कर्म ब्राह्मण का है (१) न्यायपूर्वक प्रजा का रक्षण एवं पालन करना, दान देना, यज्ञ करना, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करना और विषयासक्ति से अलग रहकर संयमित जीवन व्यतीत करना क्षत्रियवर्ण का कर्म है। (२) पशुओं का रक्षण एवं संवर्द्धन, दान देना, यज्ञ करना, अध्ययन करना, व्यापार करना उचित ब्याज लेना और कृषि कार्य करना, ये वैश्य के कर्म हैं। (३) निन्दा एवं अभिमान से रहित होकर तीनों वर्णो की सेवा अथवा सहायता करना शूद्र वर्ण यानी ज्ञान हीन व्यक्ति समूह का कर्म है और इसी से वह अपना जीवन-निर्वाह भी करे।

अभी हमने गृहस्थाश्रम की ज्येष्ठता एवं श्रेष्ठता, उस पर अन्य आश्रमों की निर्भरता, गृहस्थ स्त्री-पुरुषों का पति-पत्नी एवं माता-पिता के रूप में गुण एवं कर्त्तव्य तथा स्वयं, समाज और ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य (पंच महायज्ञ), पुत्र के गुण एवं माता-पिता के प्रति उसके कर्त्तव्यों और चारों वर्णो के गुण-कर्मो की विस्तार से चर्चा की, जो गृहस्थाश्रम को स्वर्ग का आधार बनाने के लिए आवश्यक है। यदि इसे हम सरांश रूप में कहना चाहें तो इस प्रकार कह सकते हैं -

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।। (अथर्व ३/३०/२)
अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समञ्जनम्।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति।। (अथर्व ७/३६/१)
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।। (अथर्व ३/३०/३)

पुत्र पिता का अनुव्रती अर्थात् अच्छे गुणों एवं सत्संकल्पों का अनुगामी हो और माता के साथ समान एवं प्रीतियुक्त मन वाला हो। पत्नी पति के लिए मधुर एवं शान्तिदायक वचन का प्रयोग करे। हम पति-पत्नी दोनों की आँखों में मधुरता का प्रकाश हो। हम दोनों का मुख प्रसन्नता से पुष्प की भाँति खिला हुआ हो। हम एक दूसरे को अपने-अपने हृदय में धारण करें और हम दोनों का मन एक हो जाय। भाई-भाई से द्वेष न करे और बहन बहन से द्वेष न करे। भाई-बहन भी आपस में द्वेष न करे। सभी एक मतवाले होकर, एक सत्संकल्प वाले होकर कल्याणमयी रीति से वाणी बोलें।

इसी को यदि हम चाणक्य के शब्दों में कहना चाहें तो इस प्रकार कह सकते हैं-

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधयः कान्ता प्रियालापिनी,
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषितिरतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।
आतिश्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।। - चाणक्य नीति (१२/१)

जिस ग्रहस्थाश्रम में आनन्द से पूरित घर हो, पुत्र बुद्धिमान और ज्ञानी हो, स्त्री मधुरभाषिणी हो, सच्चे मित्र हों, सुमार्ग से अर्जित धन हो, अपनी पत्नी में ही अनुराग हो, प्रेम हो और सेवक-वृंद आज्ञापालक हो, घर में आगत अतिथियों का सत्कार हो, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना हो, घर में प्रतिदिन मिष्टयुक्त अन्नपान हो, सदा ही साधुओं की, विद्वानों की संगति हो, वह गृहस्थाश्रम धन्य है।

अब हम अथर्ववेद (६/१२०/३) में स्वर्ग का वर्णन देखते हैं- यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वः स्वायाः।
अश्लोणा अंगैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरौच पुत्रान्।।

जहाँ सुन्दर हृदयवाले पुण्यात्मा जन अपने शारीरिक रोग से रहित होकर आनन्द भोगते हैं, उस स्वर्ग (सुख-विशेष) में बिना लंगड़े हुएं और अंगों से बिना टेढ़े हुए हम अपने माता, पिता और पुत्रों को देखें।

इस वैदिक स्वर्ग की तुलना यदि हम उपरोक्त गृहस्थाश्रम से करते है तो पाते हैं कि एक आदर्श गृहस्थाश्रम ही वह स्वर्ग है, क्योंकि दोनों में समानता है। इसलिए यह कला तर्क संगत है कि गृहस्थाश्रम वैदिक स्वर्ग का मूलाधार है।

-सूर्य देव चौधरी

www.thearyasamaj.org

क्या वर्तमान युग में वैदिक वर्णव्यवस्था व्यावहारिक है?

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वैदिक वर्ण व्यवस्था क्या है?वैदिक वर्ण व्यवस्था वह सामाजिक व्यवस्था है जिसमें समाज के सभी मनुष्यों को उनके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र में वर्गीकृत किया गया है। यह व्यवस्था वर्तमान की जन्मना जाति व्यवस्था अर्थात् मनुष्य के जन्म पर आधारित व्यवस्था से पूर्व वैदिक काल में प्रचलित रही है। वर्तमान की यह जन्मना जाति व्यवस्था वैदिक वर्णव्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है। वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय का क्षत्रिय, वैश्य का वैश्य और शूद्र का शूद्र होता है, भले ही उनके गुण–कर्म–स्वभाव कैसे भी, अच्छे व बुरे, क्यों न हों। इस व्यवस्था में एक ब्राह्मण का पुत्र व पुत्री चाहे वह अनपढ़ हो, मद्यपायी और मांसाहारी भी हो, समाज विरोधी कार्य भी करते हों तो भी वह ब्राह्मण कहलाते हैं और शूद्र कुल मे उत्पन्न बालक व बालिकायें सुशिक्षित, सुसंस्कारित, वेदाध्यायी, वेदज्ञ, सच्चरित्र, शुद्ध आचरण करने वाले हों, तब भी वह शूद्र जातियों के ही कहलाते हैं। इन चार वर्ण वाले लोगों व उनकी सन्तानों का वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था में गुणों, कर्मों व उनके स्वभाव से कोई लेना देना नहीं है। दूसरी ओर वैदिक वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण तभी हो सकता है जब कि वह वेदों का ज्ञानी व विद्वान होने के साथ अध्ययन व अध्यापन करता–कराता हो, यज्ञ करता व कराता हो तथा दान देता व लेता हो। उसका पंच महायज्ञों करना तथा सच्चरित्र होना भी आवश्यक व अपरिहार्य है। यदि उसमें यह गुण, कर्म व स्वभाव नहीं हैं तो वह ब्राह्मण न होकर अपने गुणों आदि के अनुसार वर्णवाला होगा जिसमें वह शूद्र भी हो सकता है। इसी प्रकार यदि शूद्र में ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य के लिए आवश्यक गुण आदि हैं तो उसका वही वर्ण होगा जिस प्रकार के गुण उसमें हैं। यह वैदिक वर्ण व्यवस्था सृष्टि के आरम्भ में कब आरम्भ हुई और कब समाप्त हुई, इसकी जानकारी हमारे शास्त्रों से विदित नहीं होती। महाभारत में जन्मना जाति व्यवस्था प्रचलित थी, ऐसा ही प्रतीत होता है। कुछ थोड़े से अपवाद हो सकते हैं परन्तु उनके भी वर्ण के निर्धारण के बारे में समुचित जानकारी नहीं है।

क्या वैदिक वर्ण व्यवस्था व्यवाहारिक है? इसका उत्तर जानने के लिए कुछ अन्य पहलुओं पर विचार करना आवश्यक है। आज गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था देश–देशान्तर में कहीं सुस्थापित नहीं है। सर्वत्र जन्मना जाति व्यवस्था है जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का विकृत रूप है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ और इसका विभाजन भी हुआ। भारत का संविधान बना जिसमें देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार दिये गये हैं जो कि वर्णाश्रम व्यवस्था की मूल भावना से मेल नहीं खाते। आज किसी भी जन्मना वर्ण व जाति का मनुष्य अपनी योग्यता आदि के अनुसार भारत के सर्वोच्च पद राष्ट्रपति तक बन सकता है। इसी प्रकार से सभी वर्णों के लोग अपने गुण, कर्म, स्वभाव, पात्रता व योग्यता के अनुसार समाज में नौकरी, व्यवसाय स्वयं चुनते हैं और करते हैं। कहीं जन्मना ब्राह्मण उच्चाधिकारी हैं तो कहीं क्षत्रिय, वैश्य व जन्मना शूद्र। अतः आज वैदिक वर्णव्यवस्था कहीं प्रचलित नहीं है, यही स्पष्ट होता है। आर्य हिन्दुओं में सर्वत्र जो सामाजिक व्यवस्था प्रचलित है उसका नाम है जन्मना जाति व्यवस्था जो कि वैदिक वर्ण व्यवस्था का बिगड़ा हुआ रूप है।

कहा जाता है कि वर्ण का निर्धारण गुरुकुलों में शिक्षारत ब्रह्मचारियों के समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य किया करते थे। आर्यसमाज ने गुरुकुल खोले परन्तु कभी अपने स्नातकों को वर्ण का आबंटन नहीं किया। वर्तमान में वैदिक वर्ण व्यवस्था को स्थापित व प्रचलित करने के लिए आर्यसमाज की ओर से कोई प्रयास व आन्दोलन भी नही हो रहा है। जन्मना जाति मानने वालों की ओर से भी वैदिक वर्ण व्यवस्था प्रचलित करने का कहीं से किसी प्रकार का कोई आग्रह नहीं है। अतः आज जन्मना जाति व्यवस्था ही प्रचलित है। हमें लगता है कि इस व्यवस्था को ही वर्तमान में व्यावहारिक कहना और मानना होगा। हो सकता है कि हमारे कुछ आर्यबन्धु और विद्वान हमसे सहमत न हों?हम ऐसे मित्रों का स्वागत करते हैं और हमारा मत है कि हम सत्य को ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं। अतः विद्वानों से प्रार्थना करते हैं कि वह वैदिक वर्ण व्यवस्था वर्तमान समय में व्यावहारिक है अथवा नहीं, इस पर अपनी सहमति व असहमति सूचित करने की कृपा करें।

श्रम व मनुष्यों के कार्यों के विभाजन पर विचार करें तो आज मनुष्य जो जो काम करता है उसकी संख्या सहस्रों में हैं। किस योग्यता वाला व कौन–2 सा काम करने वाला व्यक्ति ब्राह्मण व इतर वर्ण का होगा, इसका वर्गीकरण करना असम्भव नही तो कठिन व जटिल अवश्य है। एक व्यक्ति एक साथ नाना प्रकार के कार्य भी करता है और जीवन में समय–समय पर अपने कार्य बदलता भी रहता है। अतः आज की परिस्थितियों में वैदिक वर्ण व्यवस्था को लागू नहीं किया जा सकता, ऐसा लगता है। यह भी तथ्य है कि बिना वैदिक वर्ण व्यवस्था की स्थापना के देश व संसार का अधिकांश कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। हां, वर्तमान व्यवस्था में मनुष्य अपने योग–क्षेम अथवा अभ्युदय व निःश्रेयस से कोसों दूर है। महर्षि दयानन्द एक पौराणिक जन्मना ब्राह्मण परिवार से आये थे। वह गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार सच्चे ब्राह्मण थे परन्तु उनका यह वर्ण कहीं निश्चित नहीं किया गया था। वह योग–क्षेम और मोक्ष के पात्र बने। उनके अनुयायी अनेक वर्णों से थे जिन्होंने वेदाध्ययन किया और वेद प्रचार व समाज सुधार आदि के कार्यों सहित पंचमहायज्ञों को भी पूरी निष्ठा से करते थे। उनका भी कहीं कोई वर्ण निर्धारित नहीं किया गया। वह सभी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बने। महर्षि दयानन्द ने वेदाध्ययन सहित सन्ध्या व यज्ञ करने, जो कि वर्णव्यवस्था में केवल द्विज ही कर सकते हैं, का सबको अधिकार दिया है तथा आर्यसमाज में सभी न्यूनाधिक करते भी हैं जिससे सभी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के अधिकारी बनते हैं। उन्होंने समर्पण मन्त्र लिखकर सभी सन्ध्या करने वालों को मोक्ष का अधिकरी बना दिया है। ईश्वर को भी यह स्वीकार है, ऐसा प्रतीत होता है। मनुष्य जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में वर्ण बाधक नहीं बन रहे हैं। अतः हमें लगता है कि आज के समय में सब मनुष्य एक ही वर्ण **'मनुष्य वर्ण'** के ही हैं, भले ही वह अपने विषाय में कुछ भी मानते व कहते हों। सबको मनुष्य मानकर और वैदिक कर्मकाण्ड व परम्पराओं आदि का पालन कर कोई भी मनुष्य अभ्युदय व निःश्रेयस की प्राप्ति कर सकता है। योगाभ्यास कर समाधि अवस्था को प्राप्त होकर ईश्वर साक्षात्कार भी कर सकता है। इसमें कहीं कोई बाधा नहीं है। अतः आज बिना वर्णव्यवस्था के समाज के सभी काम किये जाना सम्भव है। यह भी वर्णन कर दें कि महर्षि दयानन्द ने एक स्थान पर वर्ण व्यवस्था के स्वरूप से खिन्न होकर इसे **''मरण व्यवस्था''** लिखा है। वह

आर्य समाज जमुनियाबाग चौक फैजाबाद का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जमुनिया बाग चौक, फैजाबाद का ११७वां वार्षिकोत्सव दि. २८ से ३० नवम्बर, २०१६ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा वेद मर्मज्ञ पं. दीना नाथ शास्त्री अमेठी होंगे। इसके अतिरिक्त आचार्य हरि शंकर अग्निहोत्री, आगरा, श्री विमल किशोर आर्य वैदिक प्रवक्ता लखनऊ के वेद प्रवचन एवं आर्य जगत के सुविख्यात भजनोपदेशक श्री नरेश दत्त बिजनौर, श्री कैलाश कर्मठ कोलकाता एवं स्थानीय विद्वान प्राचार्य गुरूकुल महाविद्यालय श्री नागेन्द्र कुमार शास्त्री के व्याख्यान होंगे। उत्सव में प्रातः ७ बजे से १०:३० बजे तक चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ एवं ध्वजारोहण तथा १२ बजे से एक भव्य शोभा यात्रा निकाली जायेगी।

दोपहर २ बजे से ४ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन सायंकाल ७:३० बजे से ६:३० बजे तक प्रतिदिन भजन एवं वेद प्रवचन आदि होंगे।

-मंत्री
आर्य समाज जमुनियाबाग, फैजाबाद

अभिनेता का प्रायश्चित यज्ञ

फिल्म अभिनेता श्री ओमपुरी ने पिछले दिनों एक शहीद जवान की वीरगति पर टिप्पणी कर दी थी। उन्होंने आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. वागीश आचार्य से मार्गदर्शन माँगा। आचार्य श्री ने जवान के घर जाकर क्षमायाचना करने और यज्ञपूर्वक प्रायश्चित करने को कहा। श्री ओमपुरी १८ अक्टूबर २०१६ को उत्तर प्रदेश जनपद इटावा के ग्राम नगलाबरी पहुंचे। वहां लखनऊवासी आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक' ने पाँच सौ व्यक्तियों की उपस्थिति में 'पुनन्तु मा देवजनाः' आदि मन्त्रों से प्रायश्चित यज्ञ सम्पन्न कराया।

-राकेश माहना,
मंत्री

www.thearyasamaj.org

हमारे शाश्वत वृद्ध 'वाचक या याचक'

देहिनोऽस्मिनतथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्रात्पितर्धीरस्तत्र न मुहयति।।

—सुमन गोयल

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जिस प्रकार इस शरीर में आत्मा बाल्यकाल यौवन तत्पश्चात् जरावस्था को प्राप्त होने पर भी रहता है उसी प्रकार यह आत्मा मरने के उपरान्त भी विद्यमान रहती है और एक शरीर छूटने के उपरान्त दूसरे शरीर को प्राप्त कर लेती है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि शरीर की तीनों अवस्थाएँ बाल्यकाल, यौवन तथा वृद्धावस्था स्वभाविक और अनिवार्य है और यही प्रकृति का नियम भी है, क्योंकि इस पृथ्वी पर जो भी जन्म लेता है उसको तीनों अवस्थाओं को भोगना पड़ता है।

सदियो से भारतीय संस्कृति और समाज मे वृद्धों को श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है परन्तु आज का नवयुवक अपने परिवार में रह रहे वृद्धो को उपेक्षित कर रहा है। मात्र उसकी पत्नी एवं बच्चे ही उसका परिवार है और फिर पुत्र ही जब अपने वृद्ध माता पिता की उपेक्षा करता है तो उसकी पत्नी क्यों न करेगी?वह तो बाहर से आयी है।

मूल प्रश्न यह है कि मनुष्य वर्ग में वृद्धों को सम्मान और श्रद्धा की आवश्यकता क्यों? डॉ. सम्पूर्णानन्द के अनुसार वृद्ध श्रद्धा और सम्मान के इसलिए पात्र है कि उन्होंने हमें जन्म दिया है, पालन पोषण किया है, गुरू की भांति पग पग पर हमारे भविष्य को संजोया है। एक बात और प्रत्येक मनुष्य अपने किसी स्तर पर अपने ईष्ट देव की पूजा करता है जो एक प्रकार से श्रद्धा और सम्मान देने का ही प्रतीक है। फिर हमारे माता पिता भी तो शाश्वत देवता ही है। जिन्होंने अपना हम पर सर्वस्व न्यौछावर कर दिया है। वे तो साक्षात देव ही हैं तो फिर उनकी पूजा क्यों नहीं? वृद्धों के सम्बन्ध में नीति श्लोकों में कहा भी गया है।

वृद्धनां समादरितं चैव उपसेवित चत्वारि वृर्द्धते आयुः यशो बलम्।

अर्थात् वृद्धो का आदर एवं उनकी सेवा करने से उनको प्रतिदिन नमन करने से मनुष्य को चार फलों की प्राप्ति होती है। आयु, विद्या यश और बल। परन्तु आधुनिकता नई शिक्षा व सभ्यता के प्रभाव ने हमारी नई पीढ़ी में जहाँ अन्य अवांछनियताओं को जन्म दिया है वहीं उनमें वृद्धों के प्रति उपेक्षा और तिरस्कार के भाव पैदा कर दिये है जिसे भविष्य के लिए एक आत्मधाती कदम कहा जा सकता है। इस आत्मघाती प्रवृत्ति से पश्चिमी सभ्यता के लोग पछता रहे है। कही ऐसा न हो कि हमें भी उनकी भांति पछताना पड़े।

वृद्ध ज्ञान और अनुभव के अनुपम भण्डार हैं उनमे अपनी वृद्धावस्था के कारण अंगों में शिथिलता आ जाती है जिसके कारण वे असहाय हो जाते है। समाज में वृद्ध तो प्राचीन संग्रहालय के समान है। किसी समय जर्मन की किसी जाति में यह परम्परा व्याप्त हो गयी थी कि वहाँ वृद्धों को जैसे ही उनमें शिथिलता आयी तत्काल मार दिया जाता था। धीरे–धीरे यह पाश्विक प्रक्रिया पश्चिम के सम्पूर्ण असभ्य समाजों मे व्याप्त हो गयी। परिणामस्वरूप न केवल जर्मन झुलसा अपितु विश्व के अन्य देशों को भी अपार हानि उठानी पड़ी और उसकी परिणति प्रथम विश्व युद्ध के रूप में प्रदर्शित हुई जहाँ विश्व के सभी विकसित देश पुरातीन सभ्यता के शोध पर भारी धनराशि व्यय करे रहे है यूरोप के लाखों अनुसंधानकर्ता अफ्रीका के दुर्गम क्षेत्रों मे वर्षो से अतीत की खोज में लगे हुए है वही हम अपने परिवारों के वृद्धों को वृद्धाश्रम की ओर धकेल रहे है। बड़े दुःख की बात यह है कि जिन माता पिता ने हमारे जन्म से लेकर आत्मनिर्भर होने तक हमारा पालन पोषण किया यज्ञोपवीत कराये शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध किया समाज के नियम उपनियमों से परिचय कराया उनके प्रति संतान के मन में कृतज्ञता का न जागना यही सिद्ध करता है कि वे उचित शिक्षा एवं संस्कारों से वंचित रह गये है जिससे उनमें मनुष्यता जाग्रत न हो सकी यह शिक्षित तो हैं परन्तु बौद्धिक नहीं।

माता पिता का अपने पुत्र के साथ बड़ा ही पवित्र और गूढ़ सम्बन्ध होता है। एक पिता अपने पुत्र के साथ चार प्रकार के सम्बन्धों का निर्वहन करता है (१) जन्मदाता (२) पथप्रदर्शक (३)संरक्षक तथा (४) मित्र। हर माता पिता अपने पुत्र को दुर्व्यसनों से दूर रखने का भरसक प्रयास करते है। परन्तु वर्तमान आधुनिकता ने भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति के अतीत को बदलकर रख दिया है। परिणामस्वरूप बूढ़े माता पिता 'वाचक से याचक होते जा रहे हैं। दर दर भिक्षा मांगकर अपना पेट भरने को मजबूर हो रहे है।

उन पर वृद्धावस्था आ चुकी होती है। शरीर के विभिन्न अंग शिथिल हो चुके होते है। विभिन्न प्रकार के जटिल रोगों ने उन्हें ग्रसित कर लिया होता है। अपनी जीवन भर की कमाई अपनी सन्तान पर लुटा चुके होते है। उनकी अचल सम्पत्ति पर भी उनकी सन्तान अपना कब्ज़ा कर चुकी होती है। अब उनके सामने अपने शेष जीवन को काटने व शारीरिक जरूरतों को पूरा करने की समस्या मुंह फाडें खड़ी होती है। पुत्र के अतिरिक्त कौन हो जो उनका पालन पोषण करेगा और क्यों? एक पुरानी कहावत है–Only toad knows where the harrow puches. जिसका भाव है कि मिट्टी में दबा मेंढक ही जानता है कि किसान के हल से पीड़ा कितनी होती है?

यदि हम परिवार, समाज या राष्ट्र का कल्याण चाहते हैं तथा अपने भविष्य को सुख समृद्धमयी बनाना चाहते है तो हमें अपने परिवार से ही पहल करनी होगी। महर्षि वाल्मीकि ने भी कहा है।

मातरं पितरं विप्रमाचार्य चावमन्य वै।
स पश्यति फलं तस्य प्रेतराज वशं गतः।।

अर्थात जो माता पिता ब्रह्ममण तथा गुरू का आदर सम्मान नहीं करता है वह इस जीवन में तो कष्ट भेगता ही है मृत्यु पश्चात् भी यमराज के वश में पड़ कर पाप का फल भोगता है।

११३ बजार कोट
अमोहा २४४२२१

निर्वाण दिवस पर याद करें

—प्रियवीर हेमाइना

'सत्यार्थप्रकाश' ग्रंथ विख्यात,
लेखक दयानन्द भी है ख्यात।
उसी की रचना यही विशेष
विश्व की थाती यही विशेष।।

'सत्यार्थप्रकाश' है वह ग्रंथ
जो है देता सत्य का पंथ।
भण्डार सत्य का है इसमें
प्रहार असत्य पर है इसमें

देखिए समुल्लास प्रथम ही
ईश्वरनामव्याख्या प्रथम ही।
ईश–गुणों का वर्णन ऐसा
कही नहीं है इसके जैसा।।

सन्तान सुशिक्षा कैसी हो,
सुशिक्षा व्यवस्था कैसी हो?
दिया है इसमें सुन्दर ज्ञान
भक्ष्याभक्ष्य का दिया विधान।।

राजधर्म का इसमें कथनम्,
सभा–त्रयी का उत्तम कथनम्।
होवे धर्म से सब ही न्याय,
कर ग्रहण में ना हो अन्याय।।

है मत–मतान्तरों की चर्चा
सत्य पर परखने की चर्चा।
होवें विदित उनके गुण दोष,
जिससे जन–जन बने निर्दोष।।

गृह–आथम का वर्णन विशेष
कमी ना कोई छोड़ी शेष।
सबसे ही श्रेष्ठ है गृहाश्रम,,
चलते इसी से अन्य आश्रम।।

पढ़े सब ही ' सत्यार्थप्रकाश ',
जिससे मिल रहा सर्वप्रकाश
प्रकाशित करें इससे जीवन,
हो सम्यक् जीवन संचालन।।

वेदादि–सत्यशास्त्र– समन्वित
है यह ग्रन्थ सब को समर्पित।
इस रचना का उद्देश्य यही
हो अनृत तम से दूर मही।।

सत्यार्थप्रकाश ' महावरदान,
मिलता है इसमें आर्ष ज्ञान।
चलकर इसकी शिक्षाओं पर,
बढ़ाएँ पद आनन्द–पथ पर।।

चलकर इसकी शिक्षाओं पर
बनें विश्वगुरू हम पृथ्वी पर।
कहलाएँ हम आचारवान्
बन जाएँ हम संस्कारवान्।।

निर्वाण दिवस पर याद करें,
गुरूदत्त के भाव याद करें।
अठारह बार पढ़ा यह ग्रन्थ
मिले हर बार नयें ही रत्न।।

318, विपिन गार्डन, उत्तमनगर
नई दिल्ली

www.thearyasamaj.org

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२४४१/५७ - आर्यमित्र २६ नवम्बर, २०१६ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-१८ एक प्रति ₹ २.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९८३७४०२१६२, सम्पादक-९५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

वेद प्रचार कार्यक्रम

● आर्य समाज शहपुर गढ़ मुक्तेश्वर में वेद प्रचार कार्यक्रम भव्यता पूर्वक सम्पन्न हुआ सीता देवी आर्य एवं म. जगमाल सिंह आर्य के भजन हुए डा. धर्मवीर सिंह आर्य मुख्य अतिथि रहे। आचार्य प्रमोद जी का प्रवचन हुआ। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने संस्कार निर्माण के लिए प्रेरणाप्रद उपदेश दिया संयोजन श्री गजराज सिंह आर्य एवं उनके परिवार का पूर्ण सहयोग रहा।

● प्राथमिक विद्यालय कूरी कवटा जि. मेरठ में वेद प्रचार एवं यज्ञ का आयोजन किया गया यज्ञ आचार्य ऋषभ देव शास्त्री ने कराया भजन म. जगमाल सिंह एवं वन्दना आर्या ने प्रस्तुत किये। सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने उपदेश प्रदान किया उ.प्र. सरकार मंत्री शाहिद मंजूर मेरठ द्वारा भी उद्‌बोधन हुआ मा. हरीशपाल आर्य द्वारा संयोजन किया गया कई ग्रामों के हजारों लोगों ने लाभ उठाया आर्य विद्वान् विरजानन्द दैव कारिणी सम्मानित किये गये।

● आर्य समाज चामघेड़ा महेन्द्रगढ़ हरपाल में प्रथम वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया वैदिक विद्वान डॉ. धर्मवीर जी आचार्य की स्मृति में वैदिक विद्वान् श्री विरजानन्द जी दैवकरणि को आर्य समाज ने एक लाख रूपये से सम्मानित किया। आर्यमित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. लखनऊ इस सम्मान के लिए बधाई प्रदान करती है।

● आर्य समाज मुकीमपुर पिलखुआ का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न हो गया सम्मेलन में पं. वीरेन्द्र शास्त्री जी एवं पं. दिनेश दत्त जी आर्य दिल्ली के अलावा सभा मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती गुरूकुल पूठ के भी उपदेश हुए जिला सभा मंत्री अशोक आर्य शमशेर सिंह आर्य टुक्कीराम आर्य बलवीर सिंह आर्य एवं रघुवीर सिंह आर्य का पूर्ण सहयोग रहा।

● आर्य समाज रहमापुर मेरठ का वार्षिक सम्मेलन उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ शोदान सिंह आर्य जिला सभा की ओर से पधारे जिला मंत्री जिले सिंह आर्य के द्वारा प्रतिवर्ष यह कार्यक्रम प्रभावशाली रहता है।

● आर्य समाज खेड़ा पिलखुआ जिला हापुड़ में मासिक वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन जिलासभा हापुड़ के माध्यम से सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में दिल्ली से दिनेश दत्त जी आर्य एवं सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के उपदेश हुए अध्यक्ष विकास आर्य एवं मंत्री अशोक आर्य ने भी विचार प्रस्तुत किये। संयोजन रोशन लाल आर्य ने किया।

वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार

आर्य समाज दर्वेशपुर मवाना मेरठ में स्वामी विजयानन्द जी के ब्रह्मत्व में ऋग्वेद यज्ञ सम्पन्न हुआ यज्ञ संयोजक वेदपाल जी शास्त्री मवाना रहे श्री म. राजमुनि जी के परिवार में प्रतिवर्ष वेद प्रचार होता है स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं कुलदीप विद्यार्थी जी के भजन एवं उपदेश हुए। क्षेत्रीय जनता ने लाभ उठाया उनके पुत्र सतवीर सिंह एवं दोनों भाईयों का पूर्ण सहयोग रहा।

● आर्य समाज सालारपुर गढ़ मुक्तेश्वर हापुड़ में २ दिन तक स्वस्ति यज्ञ का आयोजन किया गया स्वामी अखिलानन्द जी, आचार्य प्रमोद जी, आ. दिनेश जी एवं प्रदीप कुमार शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी का प्रभाव शाली उपदेश हुआ।

● आर्य समाज प्रथमगढ़ सैदपुर जिला-मेरठ का वार्षिक सम्मेलन चल रहा था, यज्ञ सम्पन्न हो गया था भजन मा. हरीशपाल जी सुना रहे थे तभी सूचना मिली कि आर्य समाज के सदस्य का सुपुत्र ट्रैक्टर द्वारा खेत में रूड़ावेटर में फंस गया और मृत्यु हो गई तभी ग्राम में भगदड़ मच गई स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मंत्री तभी ग्रामवासियों के साथ घर पर गए और शोक संवेदना व्यक्त की तथा कार्यक्रम को शोक सभा में परिवर्तित किया गया। आर्य मित्र परिवार शोक संवेदना व्यक्त करता है।

-प्रदीप शास्त्री, गुरूकुलपूठ

शोक समाचार

● आर्य समाज पिलखुवा जिला हापुड़ के उप प्रधान श्री रतनलाल जी आर्य का ३०.१०.२०१६ को देहावसान हो गया उनकी शोकसभा में सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने जाकर सभा की ओर से एवं गुरूकुल पूठ की ओर से श्रद्धांजलि प्रदान करते हुए कहा कि वे तथा उनका परिवार गुरूकुल पूठ के लिए सदैव सहयोगी रहा है।

● आर्य समाज भड़ौली मेरठ के प्रधान राम कुमार शास्त्री के पिता जी का बीमारी में देहान्त हो गया श्री रघुनाथ जी लगभग ८५ वर्ष के थे सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त की तथा बड़े पुत्र सुरेन्द्र आर्य को पगड़ी बांध कर आशीर्वाद दिया आपके ६ पुत्र व १ पुत्री हैं।

● मेरठ की आर्य समाज भड़ौली के मंत्री लवकुश शास्त्री की माता जी का निधन हो गया वे बीमार चल रही थीं आ. प्रेमपाल शास्त्री ने शान्ति यज्ञ कराया सभा की ओर से सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।

● गुरूकुल पूठ के प्राचार्य राजीव कुमार जी के पिता श्री धर्मदेव जी आर्य मंत्री आर्य समाज मल्लपुर मुरादाबाद का देहावसान हो गया गुरूकुल पूठ से आ. दिनेश जी स्वामी अखिलानन्द जी सहित आचार्य सुधीर जी अन्तिम यात्रा में पहुंचे सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी ने सभा की ओर से घर पहुंचकर शोक संवेदना व्यक्त की एवं शान्ति यज्ञ किया।

● आर्य समाज डूंगरा जाट बुलन्दशहर के मंत्री भूले सिंह आर्य के बड़े पुत्र राजीव कुमार आर्य का अचानक हार्ट अटैक/ब्रेन हैमरेज द्वारा देहान्त हो गया। परिवार पर दुःख का पहाड़ ही टूट गया स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुल पूठ ने अन्तिम संस्कार कराया सभा की ओर से स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवारी सभी सदस्यों को शोक संवेदना व्यक्त की। दो छोटे भाई १ बहन

ऋषिराज चले आओ

-संजीव रूप 'वैदिक मिश्नरी'

ऋषिराज चले आओ, तुम्हें ये देश बुलाता है।
ये धरा रो रही है, गगन आवाज लगाता है।।

काशी ने फिर कस ली है कमर वेदों को मिटाकर रहेंगे,
मथुरा ने भी खाली है कसम गीता को जला कर रहेंगे।
सरयू का सिसकता तट दुःखी होकर चिल्लाता है।।

रो रो बुलाती है तुमको गौएं चलती है हर दिन कटारी,
वेदों की वाणी संस्कृत बुलाती, इस पर भी विपदा है भारी।
दिल्ली अंधी बहरी तिरंगा झटपटाता है।।

वेदों का पावन भाषा अधूरा प्रचार भी है अधूरा,
आजादी मिलते ही छिन गई, आजादी का सपना अधूरा।
बिस्मिल-सुभाष का खून व्यर्थ में बहता जाता है।।

जिस मठ पे तुमने ठोकर, वो मठ है अब जगमगाती,
मंदिर व गुरुकुल तुमने बनाए, उनमें न रौनक दिखाती।
लेता है तुम्हारा नाम व्यर्थ उसे खाए जाता है।
ऋषिराज चले आओ तुम्हें ये देश बलाता है।।

-गुंधनी, बदायूँ

निर्वाचन

जिला आर्य सभा (आर्य प्रतिनिधि सभा) ऊधम सिंह नगर

प्रधान	::	आचार्य डॉ. विश्वमित्र शास्त्री
मंत्री	::	श्री विनीत कुमार
कोषाध्यक्ष	::	आचार्य पं. सुरेन्द्रपाल शास्त्री

वार्षिक सम्मेलन

आर्य समाज नंगला राठी, सकौती मेरठ में दीपावली के पावन पर्व पर ३ दिन का वार्षिक सम्मेलन हुआ श्री कुलदीप जी विद्यार्थी एवं म. गजराज सिंह प्रेमी जी के भजन तथा वेदपाल शास्त्री के प्रवचन हुए संयोजन श्री महेन्द्र सिंह आर्य ने किया पूरा ग्राम का कार्यक्रम का प्रतिवर्ष लाभ उठाता है।

-प्रदीप शास्त्री
गुरूकुलपूठ, हापुड़

शोक समाचार

● आर्य मित्र के कार्यकारी सम्पादक-आर्य शिवशंकर वैश्य की बड़ी भाभी-श्रीमती रामखुशी देवी पत्नी स्व. बजरंग लाल वैश्य उम्र ७० वर्ष में दिनांक २६ नवम्बर, २०१६ को प्रातः ५ बजे देहान्त हो गया। वह कुछ समय से बीमार चल रहीं थीं। अन्तिम संस्कार में रिश्तेदारों सहित अनेक सम्भ्रान्त व्यक्ति मौजूद रहे।

● आर्य समाज पनवाड़ी सिविल लाइन्स, जनपद-बदायूँ की उप प्रधाना-श्रीमती मिथिलेश आर्या का आकस्मिक निधन दिनांक २०.११.२०१६ को मध्य रात्रि में हो गया। उनकी अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक २१.११.२०१६ को पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न किया गया।

शांति एवं शुद्धि यज्ञ दिनांक २५.११.२०१६ को प्रातः ११ बजे निवास स्थल आर्य सदन, कैलाश टाकीज के पीछे, बदायूँ में सम्पन्न हुआ।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।